भास्कर प्रकाश

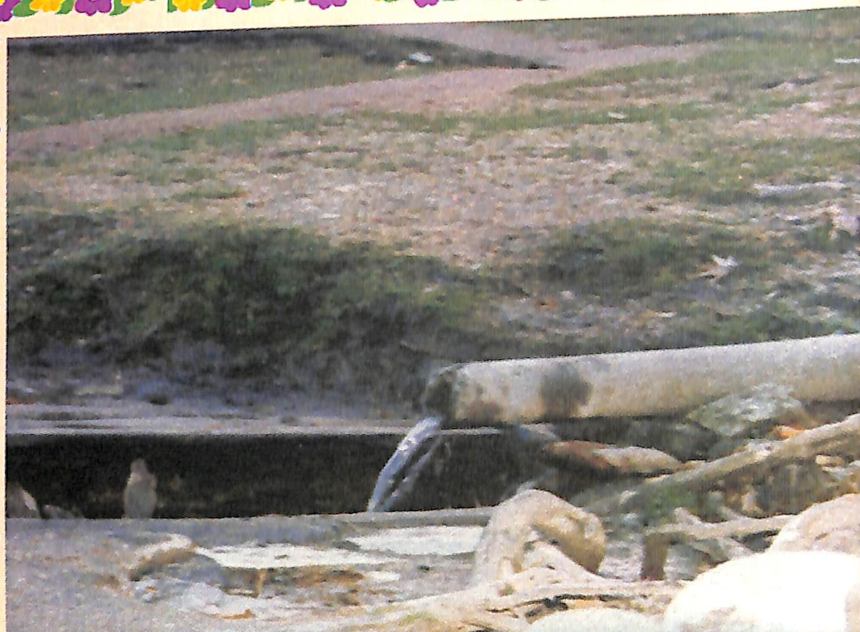
ओमकार आधार

स्वामी आफ़ताब जी

औतार कृष्ण राज़दान
A·K·Razdan



परमपुज्य स्वामी आफ़ताब जी महाराज
कारिहामा-कुपवारा, कश्मीर
3 अगस्त 1883 ई॰ - 28 जनवरी 1960 ई॰



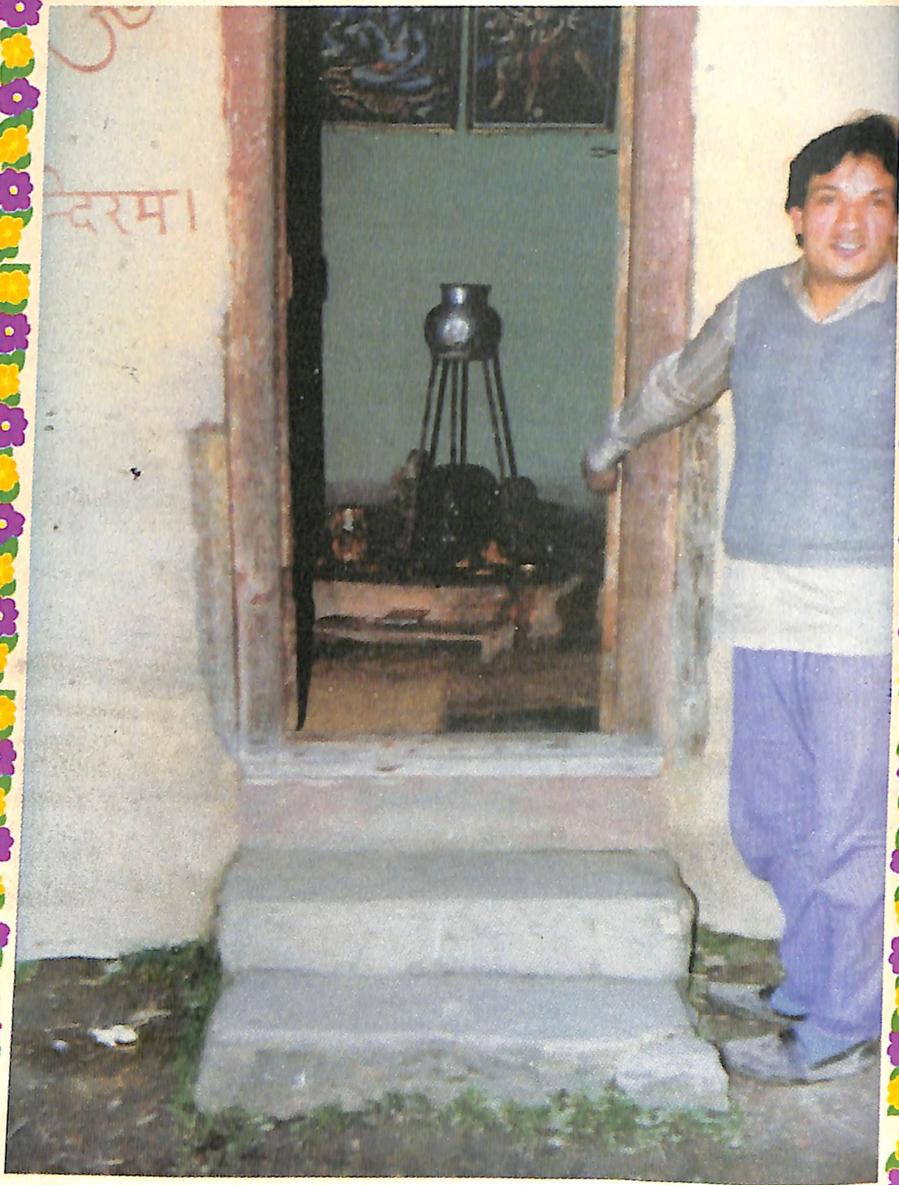
आश्रम किस आंगनस मंज़ अख ल्वकुट पाँ ज्वय।



परमपुज्य स्वामी आफ़ताब जी महाराज 'भास्कर'



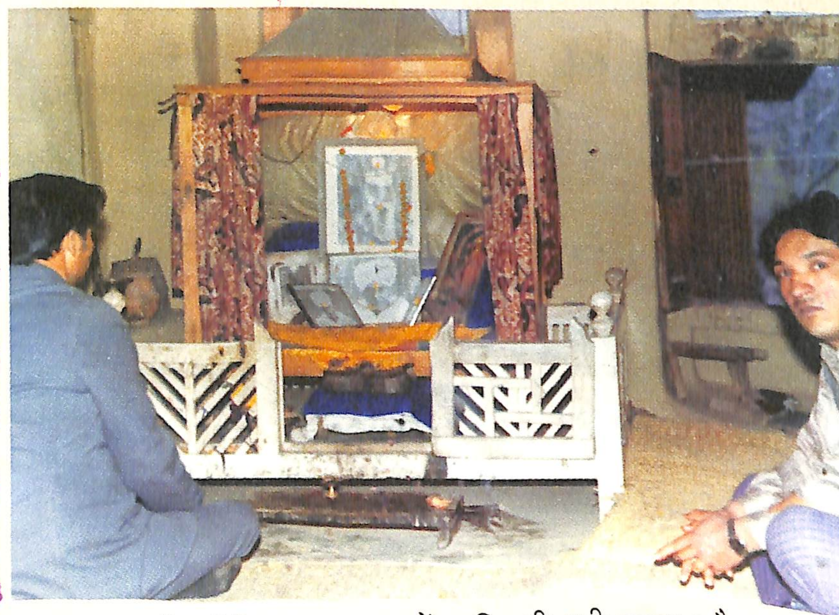
आश्रमस मंज़ अख भ्रन कुल,
युस कॉशरिस मंज़ गणेश सुंद अख प्रत्यक्ष छु मानन यिवान।



आश्रमुक अख ल्वकुट मंदर, यथ स्वामी जियन छु
पनुन्यव अथव कुन द्युतमुत।



आश्रमस मंज़ अख चूक्य,
यथ प्यठ स्वामी जी अकसर बॆहान ऑस्य।



स्वामी जीनिस आसनस ब्रोंहकनि श्री हरी कृष्ण कौल
तु श्री सुरन्दर जी हॉज़री त्रावान।



स्वामी जीयुन आसन तु चर्ण पाधुका।



स्वामी जीयिन आसनस ब्रोंहकनि जु कॉशिर सिताए,
यिम स्वामी जी पानु वायान ऑस्य।



स्वामी जीनिस चर्ण पाधुका।

भास्कर प्रकाश

𑆨𑆳𑆱𑇀𑆑𑆫 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯

𑆯𑇀𑆫𑆵𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆳𑆮𑆬𑆵

𑆃𑆀𑆑𑆳𑆫 𑆫𑆷𑆥 𑆮𑆴𑆮𑆫𑆟

संम्पादक

स्वामी आफ़ताब जी

कारिहामा कुपवारा, कश्मीर

भास्कर प्रकाश

(येमि किताबि हुंद्य् कुलहुम होकूक छि छापन वॉल्य सुंदि नाव मोहफूज़)

किताबि हुंद नाव	:	**भास्कर प्रकाश**
लेखन वोल	:	**स्वामी आफ़ताब ज़ी**
छापन सन	:	2010 ई.
कम्प्यूटर डी.टी.पी	:	रिंकू कौल (फोन 94191-36369) आई आई एल एस डी.टी.पी सेन्टर, मुठी जोम।
म्वल	:	ज़ु हथ रूवपयि सिर्फ (Rs.200/-)
पब्लिशर	:	पंडित हरी कृष्ण कौल सपुत्र स्व. पं. काशी नाथ कौल शिव पोरा, राम मुनशी बाग, श्रीनगर, कश्मीर।
मूल निवासी	:	बाग, जोगी लंकर, रैणावारी, श्रीनगर, कश्मीर।
छाप खानु	:	जे.के. प्रिन्टर्स, जामा मस्जिद दिल्ली-110 006 Ph: 23379852

किताब मेलनुक पत:

1. **SAYCON-CHEMISTS**
   Shop No. 65, Main Market, Jain Nagar-Delhi-110 081
   Mob.: 9136686316 Ph: 011-24506701

2. 354/1 Sector, 45 A, Chandigarh, Ph: 0172-2665244

3.

विश्य सूचि

प्राक्कथन


हरीकृष्ण कौल

कश्मीर अपने प्राकृतिक दृश्यों जलवायु तथा निजी स्थानीय विशेषताओं के कारण भूस्वर्ग की पदवी पर आसीन है। इतना ही नही अपितु इस पुण्य भूमि ने अच्छे अच्छे सूफियों, सिद्ध दार्शनिकों अद्वितीय विद्वानों, उच्चकोटि के कवियों तथा प्रतिभाशाली आचार्यों को जन्म दिया है। क्योंकि संसार नाशशील है अत: जिन महापुरुषों के चरित्र आज तक लिपिबद्ध किये गये हैं उनका जीता जागता चित्र हमारी आँखों के सामने इस समय भी फिर रहा है। उनकी मधुरवाणी से हम आज भी उसी प्रकार आप्लावित हो रहे हैं जिस प्रकार उनके सम-सामयिक आनन्द की मस्ती से झूम उठते थे।

यहाँ पर उन आदरणीय महानुभावों में से मैं विशेषतया एक का वर्णन कर रहा हूँ। आप का शुभ नाम उत्तम स्वरूप स्वामी आफ़ताब जी है। आप का जन्म 12 भाद्रपद 1939 वि० तदनुसार 3 अगस्त 1883 ई० शनिवार को 2 बजे 20 मि० कारिहामा में हुआ तथा आप का शिवलोक-गमन् 5 माघ 2016 वि० तदनुसार 28

जनवरी 1960 ई० 9 बजे 55 मि० सोमवार को हुआ। शैशव काल से ही आप में ऐसे लक्षण प्रतीत होते थे जिन से आपके अन्तर विद्यमान किसी आध्यात्मिक शक्ति का भास होता था। आप के गुरुवर ने इन्हीं कारणों से एवं आपके सहजज्ञाण के कारण ही आपको भास्कर के नाम से पुकारना उचित समझा चूंकि भास्कर (सूर्य) के प्रकाश से समस्त जगत का अन्धकार क्षणों मे मिट जाता है। अत: उक्त महानुभाव की रचना संग्रह का नाम भी मैं ने भास्कर प्रकाश रखना ही उचित समझा। अपनी ओर से मैने आपके काव्यामृत को क्रमबद्ध करने का पूर्ण प्रयत्न किया। आशा है कि सहृदय जन आपके काव्य में अद्वैतवाद, अखण्ड ब्रह्मवाद, काव्य सूक्तियों के वैचित्र्य चमत्कार को उत्पन्न करने वाली उपमाओं एवं अन्य अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग का स्वयं ही अनुभव करेंगे और अवश्य ही उनसे प्रभावित भी होंगे।

हरीकृष्ण कौल

निवेदन

'भास्कर प्रकाश' शीर्षक से स्वामी आफ़ताब जी की ये महत्त्वपूर्ण कविताएं आपके हाथों में हैं। हमारे लिए ये स्वामी जी की अमूल्य निधि है जिसे सहेज कर रखने और उससे लाभान्वित होने की अत्यंत ज़रूरत है। विशेषकर ऐसे समय में जब हम कश्मीरी पंड़ित एक समुदाय के तौर पर विनाशकारी धार्मिक आतंकवाद, जीनोसाइड और जबरिया विस्थापन के दिनों से गुज़र रहे हैं। हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए हम मात्र इतिहास न बन जाएं, हम अपनी जडों, अपनी संस्कृति, भाषा, परंपरा, तीज-त्योहार, साहित्य, दर्शन और संतों, कवियों से अनजान होकर अतीत से विहीन न हो जाएँ। ऐसे में स्वामी आफताब जी जैसे भक्त- शिरोमणि की जीवन-गाथा, उनकी तपस्या, उनका सन्देश, उनका लीला-काव्य सहेजकर रखने और उससे स्वयं को तथा हमारे संसार भर में बिखरे बच्चों को लाभान्वित होने की अत्यंत ज़रूरत है।

स्वामी आफताब जी 'भास्कर' की ये लीला-कविताएं दिव्य ज्योति के बीजाक्षर पहली बार सन् 1959 में उर्दू लिपि में प्रकाशित हुई थीं और उस संग्रह की पांच सौ प्रतियां हाथों हाथ स्वामीजी के भक्तों तक पहुँची थीं तो स्वामी जी ने इन रचनाओं को देवनागरी

लिपि में प्रकाशित करवाने की इच्छा प्रकट की थीं। उनकी इच्छा का पालन करते हुए मैं ने सन् 1968 में इन कविताओं के संग्रह की एक हज़ार प्रतियां देवनागरी लिपि में छपवाई थीं। प्रथम बार भटयार, श्रीनगर, निवासी स्वर्गीय वेदलाल धर ने इन कविताओं का हिन्दी लिप्यंतरण कर मेरी सहायता की थी, जिस के लिए में उनका हृदय से आभारी हूँ।

मैंने प्रयास किया है कि इस संस्करण में वे सारी अशुद्धियाँ न रहें जो पिछले संस्करण में रह गई थीं। मैं विलंब के लिए स्वामी जी के भक्तों से क्षमा याचना करता हूँ।

पिछले संस्करण में रही त्रुटियों को दूर करने तथा नया कशमीरी लिप्यंतरण कर इस बार मेरे सपुत्र श्री रोशन लाल कौल ने मेरी सहायता की, जिस के लिए में उनको आशीर्वाद देता हूँ।

पुस्तक के प्रारम्ब में स. पं. पीताम्बर हंडू (शास्त्री) की संस्कृत रचित स्वामीजी को की हुयी 'गरूस्तुतिः' छपाई है।

मुझे आशा है स्वामी आफताब जी 'भास्कर' की ये भक्ति रस-विभोर रचनाएं पाठकों को अध्यात्मिक आनन्द देंगी और हमें सद्मार्ग पर निरंतर चलने और चलते रहने में प्रेरित ही नहीं प्रोत्साहित करती रहेंगी।

भक्त कवियों के काव्य में मंत्रों का ओज होता है, सिद्धि होती है।

।।अस्तु।।

हरीकृष्ण कौल

गुरुस्तुतिः

आम्नाभमाप्तेश्वरज्ञान शेवधि माम्नाभज्ञोनासिनिकृत्तषड्रिपुम् ।
आम्नाभसच्छात्र विवेकसन्मति मादित्यभाभासितकाय मीडे १
ब्रह्मानुसंधान निरस्तमायं ब्रह्मत्विभाभूत स्वशिष्य ध्वान्तम् ।
ब्रह्मैक्यसंछिन्न विकर्मग्रन्थि श्रीभास्करंभास्कर भासमीडे
गोविन्दजीवाप्तसुशक्तिपातं गोविन्दविज्ञानविचार हंसम् ।
गोविन्दभक्तर्षिकृतसुसंगमं श्रीभास्करं ००० ॥ ३ ॥
तत्त्वंपदार्थैक्यविवेचन परं तत्त्वं पदार्थैक्यसुनिश्चयान्वितम्
तत्त्वंपादार्थैक्यनिरस्तद्वैतं श्रीभास्करं ०००॥ ४ ॥
कुमारग्रामस्थजनान्धकारहं कुमारमंमर्दन संयमायुधम् ।
कुमारतातेत्त्वणप्राप्त सद्गतिं श्रीभास्करं ००० ॥ ५ ॥
ताभाख्यताताप्तसुजन्मस्वद्रुमं स्वशिष्यहृद् द्वापर भेदनक्षमम्

स्ववाक्यभाभासित लोकसत्यथं श्रीभास्करं० ॥ ६ ॥
दीक्षावसुदान निरस्तनैःस्वं दीक्षामणि द्योतित भक्ति मार्गम्
दीक्षासिसंच्छिन्नप्रपंचजालंदीक्षाप्रदं श्रीगुरुवर्यमीडे ॥ ७ ॥
श्रीपार्वती कुक्षिवनोद्भवसुमं श्रीपार्वतीस्तोत्रसुपूतमानसम्
श्रीपार्वतीनन्दनदत्तवैभवं श्रीभास्करं ०००॥ ८ ॥
पीताम्बर प्रेरणया कृतस्तवं पीताम्बरेण विबुधाघ्रिसेविना ।
पीतम्बरासक्तधियं सुमेधसं श्रीभास्करं०००॥ ९ ॥
समर्पितंत्वच्चरणारविन्दयोः श्रद्धाञ्जलिं भावप्रसून गुम्फितम् ।
गृह्णन्तुमातेवस्वपुत्रभाषितं दयालवोभास्कर देशिका बुधाः ॥१०

श्रीगुरोर्दशकमेतद्यः पठेत्सततं बुधः
आप्नुयान्मानसंकामं श्रीगुरोः कृपयातुसः

ग्वडुन्य तस आदि दीवस कर नमस्कार

ग्वडुन्य तस आदि दीवस कर नमस्कार।
व्यनायक सेदि दाता व्यॅगनु हरतार।।
छु गनपत सारिकुय सरताज वोनमुत।
छु गनपत सारिकुय महाराज वोनमुत।।
छि कर्मन सारिनुय पूज़ा तसुंज़ आद।
छि धर्मन सारिनुय व्यॉदी करान बाद।।
वॅरिथ आरंभ स्वरन यिम नेत्य तसुंद नाव।
गछ़्यख स्यद कामना व्यग्नुक छु अबाव।।
सु प्रेयिवर दयि सुंद गज़म्वख तरनतार।
यछ़ा संतान सॅती हुन्द छु म्वखतार।।
सु सरदार दीवनुय हुंद सरकार मानुन।
बु दरबार तस छु सतकार पार्यज़ानुन।।
व्यनायक छु सुनायक नेत्य सहायक।
सु वरदायक त्वता करनस लायक।।
सॅतीसत माजि हंदि पासु कर मे दासस।
वॅरिथ वास आस बास व्यसवुन व्यकासस।।
चतुर दल द्वार मूलादारकुय ध्यान।
त्रेपुर व्वलँगिथ छु चूरिम तीत रोज़ान।।
तवय ननि नोन 'भास्कर' पॉन्य पानु व्वलसान।
नेत्य आनन्दमय निरद्वन्द शूबान।।

ओमकार् आधार् हे उमा पुत्र

ओमकार् आधार् हे उमा पुत्र।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।

प्रेयम् स्वर् स्वरहथ हे विद्याधर्,
गज़म्वख सनम्वख दर्शुन मे हाव।
हर म्वख् स्वख म्वख् वनि यित् मनुसर्।।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।०।।

मूला दार् लोल आम योगेन्दर्,
चॊतुरदल् व्वलसिथ विराजमान।
प्रान् अपान् अर्ग् बर्ग् पूज़ चॉन्य कर्।।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।०।।

नायक व्यनायक छुख सहायक ग्वर्,
चॊतुर ब्वज़ चोर आयुध चमकान।
धर्म् अर्थ् काम् कामकि मूखि दातर्।।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।०।।

उमानन्दन क्षमा सागर्,
रुम् रुम् रुमन छम चॉनी कल।
रुमा रूज़िथ बोज़तम ऑरचर्।।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।०।।

येगनि बखि विघ्न हार् गगन् पीतांबर्,
मगन् आनन्द संदि व्वंदहय पान।
च़्यथ विमर्श दिपतिमान् कूटि सिर्यि च़ँदर्।।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।०।।

भक्ति रक्षि शक्ति प्रेयि हे वलबादर्,
मूक्ष दात् रक्त वर्न् छुख चु त्रिनयन।
प्वखत् कार् म्वखतार् मुक्त् बनि म्वखतसर्।।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।०।।

ईकु दंत् वकर् तुंड् हे सेंदि दातर्,
दीर्घमोर मुकट् शूबायि मान।
मूशकु वाहन् योनि नागेंद्र।।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।०।।

लाल् माल् नॉल्य छय हे बाल् च़ँद्र,
माल् करहय यित् साल छुय सोन।
शिव नाथ् संदि टाठि हे इच्छा पुत्तर्।।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।०।।

आदि दीव् व्याध कास बास नेबॅर् अंदर्,
सत सॅती माजि हुंदि पास् कर मे पास।
मन् निवास् आस भास नोन 'भास्कर्'।।
हे लम्बूदर् दर् चोनुय ध्यान।।०।।



आदि दीवु कारनु व्यॉदी निवारो

आदि दीवु कारनु व्यॉदी निवारो।
सॊदि दातारो बॅव्य नय जय।।

ईकु दन्तु वकरु तुण्ड़ सर्व आदिकारो,
गज़ु म्वखुदारो अज़ु अभय।
उमा नन्दनु गनु सरदारो।।
सॊदि दातारो बॅव्य नय जय।।०।।

च़ोतुर दलु बलवीरु मूलादारो,
न्यथ पॅहरुदारो ह्यथ वर अभय।
असतरु शसतरु ज़ोरावारो।।
सॊदि दातारो बॅव्य नय जय।।०।।

मंत्र नायक सहायक उदारो,
कर परमु पारो व्यनायक स्यदय।
हे वरदायकु बडि सरकारो।।
सॊदि दातारो बॅव्य नय जय।।०।।

कृष्णु प्यंगलु धूमरु वर्णु शॊशि शीखारो,
नागेन्द्रधारो छुख परमु परय।
बालु च़ँद्र लालु मालु नॉल्य म्वखतुहारो।।
सॊदि दातारो बॅव्य नय जय।।०।।

विकटु वर्णु सिरियि च़न्द्रमु तारो,
त्रिन्यथरु धारो स्वर्णमय।

व्यगनु राज़ु यज्ञनि दीवु गगनु आधारो।।
सॆदि दातारो बॅव्य नय जय।।०।।

माजि हुंदि राजु ज़ादु हा ताजदारो,
ईशरु प्यारो हे गणेश्वरय।
रक्तु र्वनु शक्ति प्रॆयि भखत्यन सहारो।।
सॆदि दातारो बॅव्य नय जय।।०।।

पास़ कर बास नॊन कास अन्धकारो,
कर ह्यत्कारो दासन ज़य।
सास 'भास्कर' छुय त्वता कारो।।
सॆदि दातारो बॅव्य नय जय।।०।।



अन्धुकारुक्य इन्दु शिव शांत सतग्वरु

अन्धुकारुकि इन्दु शिव शांत सतग्वरु।
परापर परमुदामु रामु रामु परयो।।

आदिदीवु गोविंदु नादु ब्यंदु अक्षरु।
न्यर दुन्दु नॆशकामु रामु रामु परयो।।

दयि अद्वय दयि दयायि किन्य चाव।
प्रेमु मसुकी जाम रामु रामु परयो।।

तमि मसु रसु रसु लगहय नावस।
हावसु सुब शामु रामु रामु परयो।।



परमपुज्य स्वामी आफ़ताब जी महाराज

कारिहामा-कुपवारा, कश्मीर

3 अगस्त 1883 ई॰ - 28 जनवरी 1960 ई॰

इन्द्‌ रव्‌ व्वंदि बास अज्ञान्‌ गट्‌ कास।
बास मंज़ खास्‌ आम्‌ राम्‌ राम्‌ परयो।।
शाम्‌ रगुँ बोम्बरो गुं गुं चानि सुत्य।
ही तनि च़जि मा हाम्‌ राम्‌ राम्‌ परयो।।
अनुग्रेह पूर कर संकट मे दूर कर।
च़लनम लूक्‌ पाम्‌ राम्‌ राम्‌ परयो।।
शक्ति पात्‌ सुत्यन मुक्ति दात्‌ सॉन्य खेत।
पपनाव हचि त्‌ हाम्‌ राम्‌ राम्‌ परयो।।
मुरली वायिव्‌नि अनुहत बाजि बोज।
दर्द्‌ सोज़्‌ स्वर्‌ साम्‌ राम्‌ राम्‌ परयो।।
ऑम्य ज़ॉम्य द्वद प्याल्‌ बर्‌‌य बर्‌‌य ब्‌ थावय।
चखना दाम्‌ दाम्‌ राम्‌ राम्‌ परयो।।
सोदाम दाम्‌ चाव सहस्र दल प्राव्‌नाव।
भक्ति हुंदि प्रानायाम्‌ राम्‌ राम्‌ परयो।।
कर गँडिथ बर्‌तल छुस ब्‌ दिम वरदान।
धर्म्‌ अर्थ्‌ मोक्ष काम्‌ राम्‌ राम्‌ परयो।।
अज्ञान्‌ गट्‌ कास 'भास्कर' नोन बास।
अज़पा प्रानायाम्‌ राम्‌ राम्‌ परयो।।



ह्यसुके आगरु मसके सागरु

ह्यसुके आगरु मसके सागरु।
हे सत ग्वरु रसु रसु मस मे चाव।।
ह्यसुकुय ह्यस दिम मसकुय मस दिम।
मसतानु तमि मसु ह्यसु व्यसराव।।
अँदरिमि तोंदर्‌य प्रान तावु नॉविथ।
च़ँदरमु मंडलु अमर्‌यत चाव।।
दमु दमु ओमकुय पन खारुनॉविथ।
यँदराज़स मे नेंदरि वुज़नाव।।
हमसु द्वार मान सरु वारु फ्वलुनॉविथ।
सहस्त्र दलु डलु योग गथ प्रावनाव।।
कन्दापोरय शशि तु रव सॉविथ।
शिव गाश कीशव शिव वुछनाव।।
नवुवुय दारन दाह मिलनॉविथ।
द्वादशांत मंडल काह मुछनाव।।
गगनस हेरि शेरि प्राण फेरुनॉविथ।
ज़ीरु बमु सीर नादु ब्यंद वुज़नाव।।
शाह परवुय सुत्य पान वुफनॉविथ।
छ़ेपि छ़ारि सू हम पान प्रज़नाव।।
ज्योती विभूती नॅन्य प्रावुनॉविथ।
आप्त कामु प्रापत मेति करुनाव।।

आकाश पातालु छ़ाल फेरुनॉविथ।
ज़ेरि ज़ेरि हेरि ब्वन ईक बनाव।।
दिक पाल नव ग्रेह दास बाव प्रॉविथ।
सास 'भास्कर' ननि नोन बासनाव।।



शामु कामकि सुंदर शामु रामु नेशकामु श्रीधरय

शामु कामकि सुंदर शामु रामु नेशकामु श्रीधरय।
करुनाकर दुरिताहर वरदायकु सत् ग्वरय।।
नन्द नन्दन बन्दन कासतम तु न्यरबन्दनु निर्भरय।
नरु वासनु गरुडासनु शेषशायन ईशरय।।
दीशु व्यापक हे विशमबरु वरदायकु सत् ग्वरय।
भक्त रक्ष हे शक्तीश्वरु मुक्त मुक्त कर म्वख्तुसरय।।
हे प्वखतुकारु पॉरहय च़ेय म्वख्तुहार भखत्यन तार भवसरय।
चानि बरुतल त्रॉविथ छुस बु लर वरदायक सत् ग्वरय।।
आदि अंति रोस्ति नादु ब्यंद ओमकारु इन्दरव संदि सुन्दरय।
दिह मंदिरु पूज़ुहथ भोगिंदरु योगिंदर ब्रमु रंदरय।।
दशमु द्वार तरु द्वादशान्त अंतरु वरदायक सत्ग्वरय।
दीव ब्रह्मा गंदरुव कारन ध्यान दारनायि तत्परय।।
सूर्य च़ँद्रमु आकाश तारा अनुशासनु प्रकरय।
दयि भयि चोन मॉनिथ सुरासुर वरदायक सत्ग्वरय।।

गथ चॉन्य नेत्य अपारँगिथ दज़ुवन्य तति शहपरय।
बल वीर ईरु धैर छुनु वीरन सीर कुस वनि नेबरय।।
रेष्य क्रेशान डेंशिहोन आश्चर्य वरदायक सतग्वरय।
दरु क्या ध्यान मनुकुय अगोचरु वनि वॉनी स्व बनि व्यसमरय।।
ह्यस तु होश ब्वज़ तोर कोर पोशान वुछिहन बाहि नेत्रय।
ज्ञानु दृष्टि दिम पानु चुय हरेहर वरदायक सत् ग्वरय।।
नेशकारण चुय सर्वकारण त्रेयि कारनु अन्तरय।
दशि अवतार दॉरिथ चुय हिशु रॅस्ति निशु बास न्यबरु अंदरय।।
'सास भास्कर' भासुवुन छु भास्वरु वरदायक सत् ग्वरय।।०।।



योगिन्दर गौरी शंकर गिरिधर

योगिन्दर गौरी शंकर गिरिधर।
श्री सत्ग्वरु हरु बॅव्यनय जय।।

चान्यन चरनन हुंदुय छु आसरु,
व्याध कास अन्त:करनन भास।
शरनागतु वतसलु परमीश्वरु।।
श्री सत्गवर हर बॅव्यनय जय।।०।।

सथूलु सूखिमु कारण सॉन्य नेबरु अंदरु,
चराचर बावु किन्य छुख चु पूरन।
चरचन तु अर्चन चुय छुख परातपरु हरु।।
श्री सत्गवर हर बॅव्यनय जय।।०।।

अवेद्या गालुवुन छुख चु विद्यादर्,
सेदि दातर् ग्वर् चुय सर्व शक्तिमान।
प्राण् अपान् अर्ग् बर्ग् पूज़ चॉन्य कर्।।
श्री सत्गवर हर बॅव्यनय जय।।०।।

चँदर चूड नागेन्द्र हार् गिरजा दर्,
त्रिनेत्र धार् वनि वृषभवाहन्।
जटा मुकट् ह्यथ शेशिशेखर।।
श्री सत्गवर हर बॅव्यनय जय।।०।।

उरुद् रुत् भसमाधर् शीत स्वंदर्,
शँख शूल पदम् हस्त वरदअभय।
गज़ चम हेरम्भ वसतुर देगमंबर।।
श्री सत्गवर हर बॅव्यनय जय।।०।।

कारन तु दीवगन त्वतनस त्रे अक्षर्,
धारवुन्य स्यद नेत्य चोनुय ध्यान।
तारवुन करुनावि तार भवु सागर्।।
श्री सत्गवर हर बॅव्यनय जय।।०।।

गटि मंज़ प्रज़लान छुख चु 'सास भास्कर्',
आश तोश छ्ठ छ्वाय कास बास नोन।
धर्म् अर्थ् काम् दायक् मोक्ष दातर।।
श्री सत्गवर हर बॅव्यनय जय।।०।।



चँदर् चुड् शेखर सुन्दर गंगाधर

चँदर् चुड् शेखर सुन्दर गंगाधर।
शंकर सु सर्वशक्तिमान वरि मे।।

आशतोश नाशु रस्ति शांत वीदु सागुर,
ब्राँत्य ब्रम कासुवुन त्रि ज़गत नाथ।
कैलासु वास ईकांत गिरि जाधर।।
शंकर सु सर्वशक्तिमान वरि मे।।०।।

सूर् नूर् बॅर्यथय सुय परात पर् हर्,
शक्ति पातु बॅखत्यन करान अनुग्रेह।
त्रिनयन मनुनु शील् ननि नोन दिगम्बर्।।
शंकर सु सर्वशक्तिमान वरि मे।।०।।

शिवु गाश प्रवु रवु त्राव अँदर् न्यबर,
नवि नोव नवदार तर् बहिम द्वार।
दशमु द्वार् तार दियि द्वादशांत अंतर।।
शंकर सु सर्वशक्तिमान वरि मे।।०।।

ओम भूर भुव: योगीश्वर् सु ग्वर् वर्,
आप्त कामु व्यापक सु शिव निर्वाण।
अष्टु सेदि दातर् येष्ट दीव दुष्टु हर्।।
शंकर सु सर्वशक्तिमान वरि मे।।०।।

प्राण अपान अर्ग भर्ग पूज़ तस कर,
गोड मानसर दीप दज़ि अहंकार।
ज्योति विभूति हरम्ख ब्रमसर।।
शंकर सु सर्वशक्तिमान वरि मे।।०।।

सत रेश्य त कारन स्यद बेयि गंदर्व,
शशि त रव नेशिदिन दरवन्य छि द्यान।
ऋद्धि त सिद्धि दिवान सु सेदिदातर।।
शंकर सु सर्वशक्तिमान वरि मे।।०।।

ऑदीन तॅम्य सुय यि समसार चकर,
तॅम्य संदि शासन ज़गथ वरतान।
कैलास वास भासमान 'सास भास्कर'।।
शंकर सु सर्वशक्तिमान वरि मे।।०।।

***

अर्धनारी श्वर गौरी शंकर

अर्धनारी श्वर गौरी शंकर, वरदायक गिरि धारी।
सुरनायक विनायक इच्छा पुत्र, दर्शन सर्व प्रकारी।।
मातानु ग्रेह शक्ति पात प्रसीध।।०।।

दीश काल वयापक हिश रस्ति ईशर, हे पशुपति विश्वधारी।
शीष शायन अर्च्यत शेशिशेखर, निश बास वृशभ सवारी।।
मातानु ग्रेह शक्ति पात प्रसीध।।०।।

त्रि धाम त्रिनुयनु त्रिपुरान्तकु हरु, त्रिगुण पुर त्रिपुरारी।
त्रैनवय कारण त्वतनस च़े त्रै अख्यरु, तुरयातीत सर्वन्यारी।।
मातानु ग्रेह शक्ति पातु प्रसीध।।०।।
दयि अद्वयि दयि गछ़तम चु प्रेयिवर, करु दयि दयि भयि हारी।
दयायि चाने ज़य बनि निरन्तर, हे दयि सर्वुउपकारी।।
मातानु ग्रेह शक्ति पातु प्रसीध।।०।।
सनमुख बासतम हे गंगाधरु, स्वखु म्वखु वर द्वखहारी।
हरम्वख नोन चुय स्वरु ब्रम सरु, ग्वरु म्वखु ज़ान हमसुदारी।।
मातानु ग्रेह शक्ति पातु प्रसीध।।०।।
पूरन परषोत्तम परमेश्वरु, प्रेयि वरु प्रीतम प्यारी।
प्रत्येक परमात्म परात पर हरु, परमानन्द हितुकारी।।
मातानु ग्रेह शक्ति पातु प्रसीध।।०।।
इष्ट दीव काशी काशमरु, दुष्ट नष्ट कर कष्टवारी।
संतोष्ट बन सपश्ट चुय येष्टदातरु, सर्वजेष्ट श्रेष्ठ आधिकारी।।
मातानु ग्रेह शक्ति पातु प्रसीध।।०।।
आदन सूर व्वन्य नादु ब्यंद अक्षरु, साधन चुय रख्याकारी।
पादन च़ेय लगुहोय आदि कोटि 'भास्करु', तत सत् च़्यथ सोफारी।।
मातानु ग्रेह शक्ति पातु प्रसीध।।०।।



दयि म्यानि अक्षय हे मृत्यञ्जय

दयि म्यानि अक्षय हे मृत्यञ्जय,
भयि कास भास नोन च़्वपॉरी।
शरणॅय च़रनन आसय बु अद्वयि।।
भयि कास भास नोन च़्वपॉरी।।०।।

नेत्रन वथरय प्रेमु निर्णय नयु,
मेत्रन हुंज़ थाव सरदॉरी।
पाशु पति असतुरु शोत्रन करतु क्षय।।
भयि कास भास नोन च़्वपॉरी।।०।।

धर्मु सहकॉरी सॉरी च़्वपॉरी,
अमृत चावुख तु मॉरीय कास।
मरु मरु च़लि युथ सॉंपनव निरभयि।।
भयि कास भास नोन च़्वपॉरी।।०।।

नारस ति गुलज़ार बनि युथ क्षनु क्षनु,
द्यनु द्यनु बसन्त बहॉरी।
ननि नोन अनुग्रेह कर युथ बनि ज़य।।
भयि कास भास नोन च़्वपॉरी।।०।।

कालुक काल छुख द्वष्ट छी गालुन्य,
पालुन श्रेष्ठन हुंद सम्बन्ध।
दिक पाल रॉछ ह्यथ छुख वरदाभय।।
भयि कास भास नोन च़्वपॉरी।।०।।

स्वखु म्वखु द्रख कास बास नौन हर म्वखु,
ग्वरु म्वखु चुय छुख सहॉरी।
सनम्वख चुय 'भास्करु' सास आनन्दय।।
भयि कास भास नौन च़्वपॉरी।।०।।



वंदी मैं तेरे चरणों नन्दीश ईश सरदार

वंदी मैं तेरे चरणों नन्दीश ईश सरदार।
आनन्दु दातु शरणों बन्धनों से कर तू छुटकार।। वंदी।।
तू मालिके ज़मान हो तू खालिके जहां हो।
व्यापक तू लामकान हो जान हो सर्वुजानदार।। वंदी।।
शक्तीश शक्ति संपन्न भक्तीश भक्ति रंजन।
मुक्तीश मुक्त कारन दाता तु प्वखतु म्वखतार।। वंदी।।
नाना रूपधारी भक्तों का हितकारी।
शासन अधिकारी कशमीर राज दरबार।। वंदी।।
यज्ञनेश विघ्न हरता सृष्टि थ्यथ लय करता।
भक्तों का तू भर्त्ता धरता अनेक अवतार।। वंदी।।
विनती सुनो महाराज, राखो सदा तू मेरी लाज।
सिथित करो धर्म राज सरताज बस यह उपकार।। वंदी।।
सुख रूप मुख दिखाओ, हरमुख दुख मिटाओ।
गुरु मुख विधि सिखाओ, सन्मुख बनो सहाकार।। वंदी।।
कोटि 'भास्कर' चमतकार, सर्व गुन सर्व आधार।
सतरूप सत आकार, निर्गुण बॅयि निराकार।। वंदी।।

योग धारणायि प्राण संदोरुम

योग धारणायि प्राण संदोरुम।
ध्यान दोरुम शिव शंम्बू।।

शिव रागुक भस्म तनि पोरुम, ज़ागि ज़ोगुम कॅरिथ वैराग।
भाव नागराद प्रेम पोन्य फयोरुम, ध्यान दोरुम शिव शंम्बू।।
दिह अभिमान ग्यव ज़न कोरुम, अहंकार ज़ोलुम रत्न दीप।
मुंह अंधकार गटि गाश होरुम, ध्यान दोरुम शिव शंम्बू।।
अनहत तारि स्वर येलि चोरुम, ज़ीर भम द्राव नाद ब्यंद साज़।
इन्दरव वोन्दि अमर्यथ होरुम, ध्यान दोरुम शिव शंम्बू।।
नित्य अनित्य तोस ब्योन च़ोरुम, रुम रुम सुय ओस रमान।
ओमकुय पन दम दम खोरुम, ध्यान दोरुम शिव शंम्बू।।
शुन्य हुक बिनाह शिव व्यस्तोरुम, वुछोरुम क्षन क्षन ती।
काम क्रूध लूभ मुह मद मोरूम, ध्यान दोरुम शिव शंम्बू।।
तल प्यठ सुय मूल वुछोरुम, होस्त मसवाल कौरुम बन्द।
मूलादार द्वादशान्त तोरुम, ध्यान दोरुम शिव शंम्बू।।
गाट त्रॉविथ सुय गाट जोरूम, दय यस दियि तस च़लि ग्राव।
शिव मालिनि शिव हमस दोरुम, ध्यान दोरुम शिव शंम्बू।।
सुबह शामन सु प्रभात गोरुम, छ़ोरुम मंज़ आम खासन।
सास 'भास्कर' पान व्यच़ोरुम, ध्यान दोरुम शिव शंम्बू।।



हे नाथु अनाथुनय दया कर

हे नाथु अनाथुनय दया कर।
हे नाथु रमा पति क्षमा कर।।

दुस्तर महान भवुसागर, दिम तार बनावतन गॉव ख्वर।
रुमु रुमु रमान चु बाहि अंतर, रुमा चु रोज़ बोज़तु ऑरचर।।
हे नाथु रमा पति क्षमा कर।।०।।

हे नाथु माफ़ पाप म्यॉन्य कर, संताप त्रेयि व्यद शाप द्वख हर।
हे नाथु शफ़ाफ़ साफ़ मन कर, हे नाथु मिलापु सुरूप प्राप्त कर।।
हे नाथु रमा पति क्षमा कर।।०।।

लोभ काम क्रोध मोह अहंकार, मनु म्यानि निशि दूर कर यकबार।
राक्षस दुरात्मा दुराचार, व्यचार खडगु करुख समहार।।
सामराज ग्यानु योग स्यद कर, हे नाथु रमा पति क्षमा कर।।०।।

यस चॉन्य दया सपनि भरपूर, द्वख शूक चलान फ्वलान तिमन नूर।
र्‌यन रूग वियूग छुख गछान दूर, सम योगु विभूति योग छुख भरपूर।।
भक्तयन मुक्त गछुन छु मुख़तुसर, हे नाथु रमा पति क्षमा कर।।०।।

निर्गुण सगुन सकल निराकार, माया मयी रूप भाव प्रखचार।
युगु पतु चु धारवुन दशु अवतार, सत्य धर्मुकुय शान नोन नोमूदार।।
द्वष्टन दुरात्मन्न छु मरु मरु, हे नाथु रमा पति क्षमा कर।।०।।

हे नाथु यि दर्द सोज़ फॅर्ययाद, कन दॉरिथ बोज़ सतुक यि संवाद।
मनज़ूरि नज़र कर व्वन्य चु प्रसाद, रोज़ बोज़ चु सोन ऑरचर नाद।।
आदन बाजि करतु वादु पूर्यर, हे नाथु रमा पति क्षमा कर।।०।।

सुय शाम रमान सुबह शामुय, सुय राम प्रमान आप्त कामुय।
सुय राम समान परमु धामुय, सुय राम दमान प्रानायामुय।।
निर्मान सु राम 'सास भास्कर', हे नाथु रमा पति क्षमा कर।।०।।

ज़्यव दिम मे तिछ़ युथ बु गीत ग्यवु, अनुग्रेह प्रावु त्रावु प्रवु।
नवि प्रनवु भास सास रवु, शिवु गाशु अनुभवु शिवु शिवु।।
तवु नवि नोव द्यत्रु गछ़ु बु अमरु, हे नाथु रमा पति क्षमा कर।।०।।



पोत ज़ूने मोत वुज़नोवुम

पोत ज़ूने मोत वुज़नोवुम।
ललु नोवुम नारायण।।
प्रेयि तॅम्य संज़ि ही तन नॉवुम, पोश वथरोस प्यठ गोशन।
रोशि यियिना होश रावु रोवुम, ललु नोवुम नारायण।।

बालु पान तस पतु रावुरोवुम, हालु वॅमि सुय नालु रटुहन।
शिवु शंभू शुन्य बोलनोवुम, ललु नोवुम नारायण।।

काम् दीवस नाम् लेख्नोवुम,   पाम् थविनम कर डेशन।
रुम् रुम् सुय राम रम्नोवुम,   लल् नोवुम नारायण।।

द्वार् पत् द्वार् वार् वुछनोवुम,   ज़ूनि छ़ोंडुम मंज़ तारकन।
मारकन मंज़ नाल् मुचुरोवुम,   लल् नोवुम नारायण।।

ल्वलि मंज़लि लोल् ललनोवुम, बोल्नोवुम सुबुह शामन।
च़ीर्‌य सोवुम सुलि वुज़्नोवुम,   लल् नोवुम नारायण।।

ज़ीर् बंमकुय सीर वुज़्नोवुम,   फेर्नोवुम तति हॆरि ब्वन।
वेरि तॅम्य सुंज़ि शेरि वात्नोवुम, लल् नोवुम नारायण।।

ज़यवु नार् सुत्य वार् छल्नॉवुम, तवु लोलुन नार शोलान।
अॅछव बूज़ुम कनव वुछ्नोवुम,   लल् नोवुम नारायण।।

कंद् नाबद् आरद् नोवुम,   फंद कॅरिथ यूर्‌य अनतन।
रिन्द् लोभ्मुत व्वंद फ्वल्नोवुम, लल् नोवुम नारायण।।

हमस् दारय वार् पान प्रज़्नोवुम, प्रारि प्रारोस राम् रादन।
ब्रम् सर् पान सर् कर्नोवुम,   लल् नोवुम नारायण।।

अथ् वासय रास खेल्नोवुम,   श्वास-ओश्वास नॊन छु बासन।
'सास भास्कर' व्यकास भासनोवुम, लल् नोवुम नारायण।।

परिपूर्ण नूर बोरमुतये

परिपूर्ण नूर बॊरमुतये।
सूरमॊतये आंगन छ़ाव।।

शांत निर्मल भ्राँत्य कासुवुनये, भासवुनये सास रव ज़न।
शिव शम्भु अलख बोलमुतये, सूरमॊतये आंगन छ़ाव।।

नंगु भस्मा अंगन मॊलमुतये, हटि भुजंग जॆटि तस छि गंङ्ग।
डेकि च़ँद्रम टेकि ज़ॊलमुतये, सूरमॊतये आंगन छ़ाव।।

अलख बूज़िथ तिमु गूर्य बाये, जसदायि सान करान व्यन्ती।
धनु द्वारव बॊरनस फॊतुये, सूरमॊतये आंगन छ़ाव।।

ग्यव द्वद थॅनि आरद म्वतुये, कंदु नाबद सु व्वन्दु सान।
ह्यथ जसदा करान ब्रोंठ पॊतये, सूरमॊतये आंगन छ़ाव।।

जूग्य दॊपनख यूगी ज़ॉनिव, भूग त्रॉविथ छुस निराहार।
कामु दीवस भस्मु कॊरमुतये, सूरमॊतये आंगन छ़ाव।।

लूब, ख्यूब नहीं नय अभिलाशा, आशा यह एक मन में।
कृष्णु दर्शुन करनि आमुतये, सूरमॊतये आंगन छ़ाव।।

राधेश्याम को बोलो आदेश, ईश जोगी वेष धर के।
तमि अभिप्रायि योर आमुतये, सूरमॊतये आंगन छ़ाव।।

बूज़ जसुदायि ह्यस व्यसरॉनी, सांईं सॉन्य व्यन्था बोज़।
खोच़ि बालुक छु राथ ज़ामुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

चानि दर्शनु गछ़ि तस छ़ाये, राय क्या छय माय बरहस।
अघूर भैरव फेर गछ़ पौतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

जूग्य वौनुनस छख अनजॉनी, मान यूगियन हुंद सरदार।
राज़ु ज़गि हुंद माजि ज़ामुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

सृष्ट सिथित लय अनुग्रेह बेयि दण्ड़, अंदु ब्रह्माण्ड़ नित्य करवुन।
शीष शाये ईश आमुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

स्वखु म्वखु सुय द्रूख दॉद्य कासान, बासान ज़न सारु निशि ब्योन।
नौन अनुग्रेह छु बन्योमुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

द्रूष्ट गालुन्य श्रेष्ट छिस पालुन्य, भूमि वालुन छुस व्वन्य बोर।
कॉल्य कालन पानय पोलमुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

बार ज़गि हुंद वारु छुस वालुन, गालुन छुस दुष्ट सम्बन्ध।
पालन कर्म वीदव वौनमुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

त्रेन भवनन भय सुय कासान, बासान सुय नित्य ननि नौन।
मूल ज़गि हुंद ब्यौल वौवुमुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

योग्‌ मायायि समयोग वॅरिथ्‌य, प्रेम्‌ बरिथ्‌य नित्य हर्षान।
कृष्ण शंकर वॅरिथ नाल्‌मोतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

ईक्षण्‌ किन्य कोरुख वार्‌ सम्वाद, दर्श्‌न ऑस्य हर्षानी।
ती वोनुख यी ज़ग्‌तस ह्योतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

शशि लूसिथ रव्‌ खोतमुतये, प्रव्‌ तारकन हुंज़्‌ चमकान।
शिव नारान कुनुय गोमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

नोन वोन पान्‌ येलि ह्‌र्‌नय, बर्‌नय तॉर्‌य मुच़रन्‌ आय।
नेबर्‌ अँदर्‌ ईक बोसमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

व्वन्द्‌ इन्द्‌ रव मन फोलमुतये, मंद्यानुच संद बासान।
सुब्‌ शामन मेल कोरमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

वीद्‌ वॉनी ईक्‌ बाव होवुख, बोवुख कस यि सीरि असरार।
शाम्‌ प्रभात अर्ध्‌ म्यूल्‌मुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

दीव आकाश! पोश वरशॉनी, अछ्‌ रछ्‌ मच्‌ नच़्‌नस गॅय।
द्राव शम्भू सु आकाश खोतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

कर्म्‌ भूमि धर्मुक सोथ द्युन, परम पावन मर्यादा।
बोर ज़गतस तुलनि आमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

द्रुष्ट द्रुर्जन नष्ट कर्‌ना वुन्य, भरनावुन्य सृष्ट आनन्द।
ईशु चुय छुख ज्येष्ट मोनमुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

रक्षा करुन्य स्येदेन तु साधन, वीदु विरूदियन वध करवुन।
शुद्ध धर्मु राज़ु अंदु गोमुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।

नाद लोयुम तॅती लोलु होतये, रासुक बास यान्य वनि आम।
'सास भास्कर' ज़न पूर्य खौतमुतये, सूरमौतये आंगन च़ाव।।



भक्ति भावनायि म्वखतु ब्योल ज़ावो

भक्ति भावनायि म्वखतु ब्योल ज़ावो।
शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
प्वखतु कारन छु तमिकुय चावो, मुक्त म्वखतुसर मानसबल।।
हमसु पखुवय पान वुफुनावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
नंदु गोर्युन पुरोहित आवो, म्वखतु माल ह्यथ कौरुख मंगल।
वाख खांदरुक ताख साथ द्रावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
हार अनमोल वुछिथ व्यसुर्यावो, मन जसदायि गॅयि च़ंचल।
यथ छु पुशरुन प्रास थदिनावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
बालु गूपाल तमि बालु भावो, बालक ह्यथ करान छ़ल बल।
गिंदनस सु रिंदु व्वलुसनु आवो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।

गॅय लज़ि पज़ि ती प्रखट्यावो, यी बूज़मुत तिमव हलचल।
अज़ मा सनु मन्दुछम नावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
अँदरी तस छ़ँदरुन आवो, यँद्ररस सुत्य करि क्या छ़ल।
सु छु च़ौर च़ौर करान हावु भावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
छ़ालु मारान ज़ॉगिथ आवो, त्यॉगिथ लज़ करनि गांगल।
माल नीनस गल में पावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
डालु दिवान शुर्य ह्यथ द्रावो, बनसॅरी ह्यथ नयनु पदमु दल।
राधा कृष्ण वाद प्रखट्यावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
दम गव तस वनि कस ग्रावो, रुमु रुमु गॅयि गुमन तल।
ह्यमु कस तु दिमु बुथकस हावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
लारान पतु लॅजमुच़ दावो, प्रारान छितु गॅयि निर्बल।
हारान म्वखु प्यठु सिरियि तावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
असुवुन रसु बर्वुन चावो, ज़ोनुन लज़ि गॅय मोहमिल।
माल कॅडुन नालु तु छॅकरुनि द्रावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
फलि फलि माल अकी हवावो, छॅकरिथ छुनिन मंज़ जंगल।
न्यंगलन छे नार तस लरज़ु च़ावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
प्रास क्या दिमु खास छ्वन्यावो, सोन्य गरि नॅनि अज़ प्यठ तल।
गँज़रनु मा छिनालुय द्रावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।
दयु लाज रछ शर्म सीर थावो, आसरु लर त्रॉविथ बरु तल।
'सास भास्कर' खास प्रखट्यावो, शक्ति पातु द्राव अनुग्रेह फल।।



नालुमति रटुहथ गंडय त्रेटच्य तु मालु

नालुमति रटुहथ गंडय त्रेटच्य तु मालु।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।

दाय बोज़ मायि किन्य गॅयस यॅच़ मतुवालु,
लाये नु मालि पुछ़ि छ़ायि मॅसा रोज़।
नबुचन तारन गंडय त्रेट्य् तु मालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

वनु वनु मनु मँज़्य लॅज़मुच़ शर्मि ज़ाल,
म्वखतु माल अनु कति पुशरन बोग।
म्वखतुसर वनुनम असलुय छि छिनालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

थॅचमुच़ तापु मँज़्य गॅच़ गॅयि कमि हालु,
मंदछेमुच़ सॅच़ पानस करान।
पनुनी योद वातिहेख ह्यथ च़ोलुम दिवान डालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

छ़ालु ओस मारान बालु बालु-गूपालु,
ग्वालु बालु सुत्य यॅच़ हर्षमय।
माल वॅकुडुन नालु तु छॅकरुन बालु बालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

जसुदायि हाल गव यॅच़ गयि बेहालु,
अहवाल बावि कस कमि हालय।

गॉमुच़ निहाल गॅयि यॅच़ दोपुन गव महालु ।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर ।।० ।।

बडि नाद लोयनस हतो म्यानि नन्दुलालु,
लोल आम बोलान कृष्ण कृष्ण छस ।
च़ालि च़ालि नेत्रन छम म्वखतन्य च़ालु ।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर ।।० ।।

अंतरयॉमी ज़ानान अहवालु,
नालु रॅट्न जसुदा ममतायि सान ।
मायि सान असवुन छुस वनान मिसालु ।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर ।।० ।।

मॉजॉय म्वखत् ब्योल कोरमय वनस हवालु,
म्वखतु थरि रँग रँग तु कुल्य फोल्य मॅत्य ।
म्वखतु सुत्य बरनु आयि ज़ंगल कोह तु बालु ।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर ।।० ।।

हिरि ज़न स्व गॉमुच़ वीरि नेरि फल निहालु,
सीर बोज़ केंछ़ा पछ़ छस यिवान ।
वीर तति यीर् नतु ज़ोनुन शुर्य खयालु ।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर ।।० ।।

दोपनख नीरिव शुर्य त्रियि बॅड्य तु बालु,
पवखतु कार मवखतस कॅरिव अम्बार ।
फलि फलि खल समि त्राव व्वन्य मलालु ।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर ।।० ।।

सॉरी सॅमिथ आयि ब्रजिलूकु बॅड्य तु बालु,
म्वखतु कुल्य मूरि-मूरि बॅर्य-बॅर्य वुछान।
दुर, शाहवार, शब चराग, रॅतनु, लालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

अलमास ज़मरुद म्वखतु नीलम मिसालु,
बॅर्य-बॅर्य कुल्य तु कानु दानु दानु सेर।
सासु बॅद्य बागवान लछि बॅद्य द्वारपालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

काश्तकार लछि बॅद्य ख्वदकाश्त नन्दुलालु,
योगु माया वुछिथ गॅयि हॉरान।
सॊंबरान बक्ति किन्य लूख म्वखतु स्वकालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

मीनिथ बॉगरान कस वॉत्य कुत्य कनालु,
बॉगरान नन्दुगूर जॉगीरदार।
सारिवुय गरु बॅर्य म्वखतुकी रॅत्यि कालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

बॉगरान बाग्य यस यी ल्यूखमुत कपालु,
कॉर्यगर म्वछि फोल सॊंबरावान।
डींशिथ पुरोहित क्रेशान तमि हालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

ज़ोनुन वेलु वोत मेलनुक तमि कालु,
अनुग्रेह पपुनस नॊन शक्तिपात।

गॅणिशि त्रखु सोंबरुनि द्राव आव रुत फाल।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।
खॉर् बॅद्य म्वखतु अनमोल बेयि रत्नु लालु,
गॅणिशि त्रखु प्रथ कॉंसि बोरनस लोल।
हतु बॅद्य गुर्य बॉर्य ह्यथ गव ख्वशहाल।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।
लूकव गर् बॅर्य म्वखतु प्वखतु खयालु,
नन्दु गूर्य देवार म्वखतुक लोद।
भक्ति बावु ज़ोनुख सारिविय सु दयालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।
सासु बॅद्य गुर्य बॉर्य म्वखतु बेयि रत्नु लालु,
प्रास पुशुरुनि बोग बृक्ष भानुन।
सूजुख यश द्राव आकाशु पातालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।
पुरोहित थेकि कूत ज़ेवि सुत्य कतालु,
वैकुन्ठ नाथ पानु ब्रज़ मोहन।
नौनिदान ह्यथ कुबेर लक्ष्मी दिवान डालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।
सुय शाम पीताम्बर नॉल्य वनु मालु,
शेरि मोर मुकटु बंसॅरीधर।
मक्खतु सर भखत्यन छि मुक्ति तत कालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०।।

तमि वेलु मेलान भॅखुत्यन सु कालु,
खेलान अथुवास वॅरिथ रास।
'भास्कर सास' बॅर्‌य-बॅर्‌य प्रेमु प्यालु।।
बालु गूपालु सॉन्य पालना कर।।०!।



राधा कृष्ण बोल लोल छु आमुतये

राधा कृष्ण बोल लोल छु आमुतये।
नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
मोहिनी रूपा दॉरिथ आमुतये, मुह मोतये छुस सोर त्रिभुवन।
मुह गटि शामु रूप सुबह फोलमुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
रम्बुल्यव केशव तंबुलोवमुतये, त्रिभुवन पति श्री काम मर्दन।
संबलिथ पथ ब्रोंठ मसतानु मोतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
रोनि ग्वड श्रोनिदार स्वरु सामु होतये, वीदु शबदु शुन्य पूर मुतये ज़न।
साडि वुडिनि पीतांबर दोरमुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
नॉल्य मालु कनुनय स्वन बारेमुतये, जोरमुतये म्वखतु चूनि लालु मन।
कछ़कर मछ़ुबन्द संदोरमुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
बुमनुय मंज़ सुम खाल कोरमुतये, बर्‌यमॅतिये नैन मस खॉस्य ज़न।
शेरि मोर मुकटु म्वखतु जोरमुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
मन्द हास यन्द ज़न नभु वोथमुतये, तंबुलोव मुतये शिव शंभू।
तमि रूपु गोकुल सखर्‌योमुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।

वाजि बुगंरि ऑनुवाजि राजि रैनि क्युतये, ज़गि हुन्द राज़ु मोहन सु मूहान
कुनु ने द्राव त्रियि वेष दोरमुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
त्रियि वेष दॉरिथ द्राव लोत लोतये, ऑविजि ज़ॉविजि ग्रायि मारान।
राधायि वुछने गरि द्रामुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
आगंन मंज़ चाव सांग कोरमुतये, नाँग्यन्यन केशन अॅलरावान।
ब्रम गोख चँद्रमु नभु छु वोथु मुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
मोहिनी रूपु आलव कोरमुतये, वाजि बुँगरि ऑनु वाजि साज़ सोरमु सान।
राज़ु दारस योर कुननि आमुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
दीवन तु ज़ीवन सुय मारुमोतये, रैश्य क्रेशान डेंशिहोन ननि नोन।
'सास भास्कर' ज़न पूर्य खोतमुतये, नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।



ख्वनि मंज़ ललुवथ ईशवेशधारो

ख्वनि मंज़ ललुवथ ईशवेशधारो।
शामु रूपु निरविकारो वे।।

माया मसके सोदा गारो, मोहान छुख खॅरीदारो वे।
आख मालि कुनने वॅमि शहारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
थोकमुत छु पॅक्य पॅक्य कोर पतु लारो, पनथन दूर कति प्रारो वे।
द्रह दरि लोगमुत प्यठु छुम बारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
गोकुलु बृक्ष भानुन राज़दारो, डींशिथ गॅयि आशचारो वे।
संपदायि मायि तस वोनुन यकबारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।

गॅहनु पात साज़ु स्वरमु लाग ज़रकारो, कोरि म्यानि राधायि वारो वे।
मॅहलु खानु मंज़ु छुय न कांह अॅहलिकारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
यूत म्वल मंगुहम दिमय धनु द्यारो, तूल्य तूल्य लोलु सान वारो वे।
लोल तस छु तोलुन कुस खॅरी दारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
मोहिनी राधायि सुत्य सरकारो, डींश्य डींश्य वसान अशिदारो वे।
हिशि रॅस्य द्वनवय कुनुय आधिकारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
रंगु रंगु अंगु अंगु सोलु सिंगारो, बे रंग सर्वु आकारो वे।
वुछ वुछ प्रछ्य प्रछ्य करान छुस प्यारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
कवंगु कोफूरय मुशकु अंबारो, बदनस तस छु प्रखचारो वे।
सास रवु प्रवु ज़न मंज़ अंदुकारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
शीरुन तु पुरुन छुस प्रुछान वारो, मारु मॅच़ा छुम अमारो वे।
ख़्वंज़ु दायि शूबनय स्वर्गु परिवारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
गोंडमुत छुय ना विवाह कारो, तान जान मंज़ राज़ु दारो वे।
च़ेय हिशि ज़ूनि शूबि सिरियि प्रकारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
छ़लु छुस प्रछ़ान बलु आधिकारो, मेछि मोदरि कथु व्यवहारो वे।
त्रियि भाव वोनुनस कॅंह लोगुस न चारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
दोपनस नन्दगूपी कृष्णु अवतारो, तॅस सुत्य छुम मिलच़ारो वे।
मॉल्य माजि कोरमुत सुय व्यच़ारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
मोहिनी दोपनस क्या यि अंधुकारो, शूभि कॅरिथ युथ व्यखच़ारो वे।
तव ख्वतु कोनय द्युतनय ज़हारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
द्वदु थनि च़ूरसुय नटु सांगु दारो, कोरयन सुत्य वोभिच़ारो वे।
गूर्य शुर्य ह्यथ छुय न्यथ पॅहरुदारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।

वनि रावुल ख्यवान द्रुद थनि दारो, शूभि शर्मि रोस कार्बारो वे।
बर् बर् फेरान त्रॉविथ गर् बारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
क्वलि कोनय छु निनख गँडिथ पथारो, रांडु कूत बांडु मकारो वे।
नाज़नीन छख डायि पोशि तुलु हारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
राधायि वोनुनस ओनुनस आरो, ज़र् छुय नु च़ेय गाटु जारो वे।
बर् छस गॉमुच़ तॅम्य संदि अमारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
कारन तु यँद्राज़ु बंदु बरदारो, यंदु रव नव ग्रेह सितारो वे।
हुकमस छि तॉब्यह छुख सु सरकारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
ज़गि मंज़ दारान दशि अवतारो, दुशटन करान समहारो वे।
ज़नमु ज़नमु तॅम्य सुन्द म्योन मिलच़ारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
पास छुय नु हास त्राव नासु त्रासु फ्यारो, ऑसु कमि द्रोय युथ डकारो वे।
'सास भास्कर' छुय तॅम्य सुंद चमंतकारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
मोहिनी लोलुक तूल अंबारो, होवनस कृष्णु रूप वारो वे।
दारि ओश द्रनवुन्य वसान आब शारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
अँद्र नेबर् कृष्णय कुनुय आधिकारो, कुनि रुक नन्यर क्या सहारो वे।
कृष्णय राधयि कर्वुन प्यारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
महाराज़ु बॅन्यथुय यिमय शूबिदारो, कारन तु दीव परिवारो वे।
लॅगन वॅर्यथय निमथ सुत्य वारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।
प्रेमुक वादु दिथ द्राव वार् कारो, संपदायि ह्योतुन म्वल वारो वे।
माया तीत सुय ज़गत आधारो, शामु रूपु निरविकारो वे।।



शीश शायनु ईश नॊन द्रावो

शीश शायनु ईश नॊन द्रावो।
आव राधायि वरने।।

बालु गूपाल ह्यथ ब्रजु बाल, नॉल्य शूबवन्य वनुमाल।
वॉल्य कननुय म्वखतु चूनि लाल, मुकटु डेकि टेकि ख़ाल।
पीतांबर सु शाम प्रखटावो, आव राधायि वरने।।
सर्वगु अछ्छुरछ्छु नाच करनस, गंदरवु स्वरसाम परनस।
यँद्रव गथ करनस, सर्वगु मंडलुक्य द्यान स्वरनस।
दुर्गायि वर्गु वनुवानो, आव राधायि वरने।।
गरुडुवाहन शंख चॅकरुधार, शेरि मुकटु शूबिदार।
गौ लोक ज़ान ब्रजु परिवार, यँद्राज़ु छॅत्रबरदार।
यूग मायायि हुन्द हावु भावो, आव राधायि वरने।।
शूभि सान वोत मंज़ राज़ु द्वार, वैकुन्ठ बन्योमुत गरु बार।
गुल तु बुलबुल ह्यथ आबुशार, बूल्य बोलान रूस्य जानवार।
राधा कृष्ण कृष्णु भक्ति भावो, आव राधायि वरने।।
स्वरगी फरुश अरुश ताबान, रंगु रंगु साज़ु सामान।
प्रंग तु पंलग अंगुरा गान, साल खेनि ब्यूठ शूबि सान।
यॆछ़ा भूज़न कोरुख भूग भावो, आव राधायि वरने।।
लॅगनुक लॅग्न सु पानु महाराज़, ज़गि मोकूफ़ गव छत तै बाज।
ब्राहमुनन म्यूल बॆयि सामराज, भक्त्यन हुंज़ रछ्छु वुन लाज।
राज़ुरॆनि माजि होव प्रभावो, आव राधायि वरने।।

मधु ग्यव डेर खॅत्य ॲगनस,   त्रप्त गव रेह वोच़ गगुनस।
प्रज़ापत पानु ब्यूठ लॅगनस,   माया तीत मन मगनस।
ज़गि मंज़ त्युथ उतसव बन्यावो, आव राधायि वरने।।
स्वर्गु अछु रछु यूगिनी गन,   विष्णु मायायि वनुवन।
कर्मु लीखा यूग लेखन,   कलशु ग्रेह बीठ्य हर्शु खानन।
वर्शु फल रुत प्रखटावो,   आव राधायि वरने।।
स्वन गॅहनु म्वखतु चूनि रत्न लाल, स्वर्गु वस्त्र जोरु शाल।
गुर्‌य हॅस्य गॉव दनु द्वार माल, धाज राज़ु रेनि द्राव रुत फाल।
वादु पूर्‌यर करान क्रावो,   आव राधायि वरने।।
संपदा ह्यथ बेयि बृक्षभान,   भॉय बंद ह्यथ हरशान।
च़ालि च़ालि बॅखुत्य म्वखतु वर्शान, कृष्णस बेयि राधायि सान।
पान आलुवान तु द्राख लावु तावो, आव राधायि वरने।।
महाराज़ ह्यथ सु माहरेन्य द्रावो, युच नन्दु गूर बरुवुन चावो।
योगु मायायि भोग प्रखटावो,   र्‌यन रूग शूख गॅयि अभावो।
छुख नु तोशान दय टोठ्यावो,   आव राधायि वरने।।
दयि पथ रछ गथ नॅन्य हावो,   भय शूक दूख दूर करनावो।
र्‌यन रूग मुह सॉरी हरुनावो,   प्रन यूगु क्षेम याद पावो।
लाज सॉन्य रछ मसॉमन्दु छावो, आव राधायि वरने।।
वेलु मेलुनुक छुय ना याद,   मेलि दय तेलि रुमु रुमु नाद।
गेलुन च़लि तु गलि उपवाद,   फॅहलि ॲंदरु नेबरु कृष्णु वाद।
'भास्करु सास' प्रज़ुलावो,   आव राधायि वरने।।



शामु रूपय हा ड़ांम्बलो

शामु रूपय हा ड़ांम्बलो।
सुबह फ्वलान फ्वलान वलो।।
शेश शायनु मुकटु दॉरी, निशु च़्य भास गरुडा सवॉरी।
ईशु न्यर्वेशु पाहे मुरॉरी, वेश करान करान वलो।।
सुबह फ्वलान फ्वलान वलो।।०।।
गूऱ्य शुऱ्य गॉव वॅछ्य गूऱ्य बाये, रास खेलुनि गोकुलु आये।
द्रायि च़ेय पतु कम्नि अभिप्राये, माय बरान बरान वलो।।
सुबह फ्वलान फ्वलान वलो।।०।।
प्रेमु द्वद थॅन्य बु छ़ायि ख्यॉविथ, मायि नाबद खीर खंडु ख्यॉविथ।
चूरि थॉविथ कर कॉँसि हॉविथ, हूर प्रारान प्रारान वलो।।
सुबह फ्वलान फ्वलान वलो।।०।।
साज़ संतूर अनु चानि वेरे, रनु मागुस तमना नेरे।
बाज़ येलि गछ़ि अदु मा फेरे, नाज़ करान करान वलो।।
सुबह फ्वलान फ्वलान वलो।।०।।
होशु वन्दय कॅबीलु क्रोनुय, रोशु करुहय पोशु वर्शोनुय।
रोशि मति गोसु क्या गोय म्योनुय, पोश छावान छावान वलो।।
सुबह फ्वलान फ्वलान वलो।।०।।
गूपियन हुंदि गिंदन बाजे, यूगियन हुंदि हा सरताजे।
माजि ज़ाव कस च़ेय ह्यू राजे, लाज रछ़ान रछ़ान वलो।।
सुबह फ्वलान फ्वलान वलो।।०।।

ख्वनि ललुवथ यिखना कुने, दिख चु दर्शुन वन्दु हॅय म्वने।
रोनि जामन जरहय चूने, ज़ूनि गिंदान गिंदान वलो।।
सुबह फ्वलान फ्वलान वलो।।०।।
तारकन मंज़ वॅन्य दिनि नेरय, मारकन मंज़ पतु पतु फेरय।
'सास भास्कर व्वलास पॉरय, रास गिंदान गिंदान वलो।।
सुबह फ्वलान फ्वलान वलो।।०।।



रटुहथ बु नालय चु सालु यिखना

रटुहथ बु नालय चु सालु यिखना।
बु प्यालु प्रेमुक्य बरय हा लालो।।

वज़ान स्रेहुच तार वुजान यि लोलु नार।
दॅज़िथ मे पेयम शाह परय हा लालो।।
बु प्यालु प्रेमुक्य बरय हा लालो।।०।।
ज़र ज़र गॉजथस सरि शामु लॉजथस।।
काचु ज़ून ज़न बो दरय हा लालो।।
बु प्यालु प्रेमुक्य बरय हा लालो।।०।।
फिरान दफतर स्वरान दॉदी।
परान वरक़ अनपरय हा लालो।।
बु प्यालु प्रेमुक्य बरय हा लालो।।०।।

ग्वालु वॅछ्य गॉव छि नालु दिवान।
सु लालु मा गव गरय हा लालो।।
बु प्यालु प्रेमुक्य बरय हा लालो।।०।।
ऋषि आयि क्रेशान ज़ांह छिनु डेंशान।
बो मालु पोशन करय हा लालो।।
बु प्यालु प्रेमुक्य बरय हा लालो।।०।।
लागय बु सॅन्यास गोपालु यिखना।
बु ल्वलि मंज़ुल करय हा लालो।।
बु प्यालु प्रेमुक्य बरय हा लालो।।०।।
कलन कौसतूर छ़लन रटन वन।
बु कॉल्य हियु तन हरय हा लालो।।
बु प्यालु प्रेमुक्य बरय हा लालो।।०।।
तवय बु बरु तल छुस लर त्रॉविथ।
चु़ पास कर 'भास्करय' हा लालो।।
बु प्यालु प्रेमुक्य बरय हा लालो।।०।।



वॅन्य दिमहोस बिन्द्राबनसय

वॅन्य दिमहोस बिन्द्राबनसय।
कथ वनुसुय रॅटनम जाय।।
सॅमिवीय-सॅमिवीय हा सॅखियो, स्वखु म्वखु दय नौन द्राव।
शामु रूपा नालु रटुहोन, बालु पानय वनि आव।

गूपाल ह्यथ गूवर्धनसुय, कथ वनुसुय रॅटनम जाय।।
लोलु वॉनी नादा लायोस, पोशिनूलु वादु गोविंदु गू।
नादु ब्यंद तारि ज़ीरु बम वायोस, कृष्णु गूपी सू हम सू।
दक्षिनायनु उतुरायनुसुय, कथ वनुसुय रॅटनम जाय।।
मोल मॉज बन्द कँबीलु क्रोनुय, त्रॉविथ मान बेयि अवुमान।
पर तु पान वारु कुनुय ज़ोनुय, चिनमय भाव स्वरौ द्यान।
छस प्रतिज्ञा योगुक्षेम दिनुसुय, कथ वनुसुय रॅटनम जाय।।
क्वलन पोन्य फ्यूर कुल्यन थुह द्राव, वसंत असुवुन बाहन मासन।
वंदु च़ोल व्वन्दु फोल नव बहार आव, गिंदान नन्दुलाल सुत्य दासन।
अॅस्य ति थफ करहोस र्‌वनि दामनु सुय, कथ वनुसुय रॅटनम जाय।।
लोलु मंज़ुलि ल्वलि ललुनावोन, च़ूरि थावोन हावोन कस।
गूर करुहोस व्वदि मंज़ सावोन, नेत्य चावोन प्रेमुक रस।
पान आलुवोस नारायणुसुय, कथ वनुसुय रॅटनम जाय।।
छ़्वयिशीत लछ ज़ीव हर्शनसुय, दर्शनसुय दीवता आय।
म्वखतु कुल्य खॅत्य तिथिस वर्शनसुय, सपर्शनुसुय छि गूपयन माय।
रेश्य क्रेशान आकर्शनुसुय, कथ वनुसुय रॅटनम जाय।।
प्रेमु रासय अथुवास कॅरिथय, 'सास भास्करु' छु नेत्य चमकान।
नाद लायोस हर्शु रसु बॅर्‌यथय, सुलि नेरव कॉफ़िलु छु दूरान।
द्वह दरि गछ़ि पतु लारनुसुय, कथ वनुसुय रॅटनम जाय।।



फ्वलुवनि सोंतय छुय म्योन सालो

फ्वलुवनि सोंतय छुय म्योन सालो।
लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।

आरवलि आरक्रँज़ गॅयि कमि हालो,
चालि चालि ओश दारि हारान छस।
यॅचकाल गव व्वन्य प्रार कूत कालो।।
लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।० ।।

यॅम्बुरज़ल लॅजमुच बॉबरनि ज़ालो,
प्यालु ह्यथ मसवल प्रारान छय।
दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुय गुलालो।।
लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।० ।।

मायि चानि सुलि वुलि फ्वजि ही मालो,
लयि लोसु यी कर दियि दर्शुन।
द्रय चॉन्य छम व्वन्य यूत नो बु चालो।।
लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।० ।।

रोशु रोशु करहय पोशन मालो,
रोशि मति गोय ना गोशन म्योन।
रोशि मा पोशि नूल द्वह गछि व्वबालो।।
लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।० ।।

आदनुक याद पाव वॉदु मो डालो,
नाद लोय कुकिलव गोविंदु गू।
आदन बाजि म्यानि त्राव शुर्य खयालो।।
लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।०।।

बॉल्य वन्तु यियिना नॉल्य छस मालो,
वाल्य छिस कननुय ग्रायि मारान।
कॉल्य मा रावव कस क्या मलालो।।
लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।०।।

साक़ुया प्याल् चाव माला मालो,
युथ न सॉ बाकी रोज़ि ग्राव।
वाक़्य रसु रसु बनु मतवालो।।
लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।०।।

सासु मंज़ु खास सुय रटहोन नालो,
सास मलि सॅन्यास मेलि गूपाल।
'भास्कर सास' छुय नॉली नालो।।
लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।०।।



गोपी नाथु भक्ति रखिपालो

गोपी नाथु भक्ति रखिपालो।
गोपालो अज़ वलो सोन।।

गूर्य गूपी वॅछ्य बृजु बालो, प्रारान छिय वाति छ़ालु मारान।
बालु गोपालु नॉल्य वनु मालो, गोपालो अज़ वलो सोन।।
लुयि लोसु प्रारान प्रारु कूत कालो, प्रेयि हीय तन नॉविथ छस।
द्रय चॉन्य छम बु नो व्वन्य च़ालो, गोपालो अज़ वलो सोन।।
रुशि रॅसति ईशु देशु रखिपालो, निशि गूपियन वेश दारान।
दारि दारि छम अशिने च़ालो, गोपालो अज़ वलो सोन।।
नालु रटुहोन कॅमिताम हालो, बालु पानय ल्वर्ल ललुनावोन।
सुलु नॉवतने क्या गोस मलालो, गोपालो अज़ वलो सोन।।
सोंथ आव तय द्राव रुत फालो, रंगु रंगु फॊल्य गुल तु गुलज़ार।
बहार नौन द्राव क्वनु आख सालो, गोपालो अज़ वलो सोन।।
गुल तु गुलज़ार द्रायि पातालो, ज़गतुचि थरि आयि फ्वलुनस।
माय करुहोस अछि पोशि मालो, गोपालो अज़ वलो सोन।।
वीर यीरु गयि गिन्द्य गिन्द्य चालो, शेश पंजिक्यन चंजिनुय तल।
लॅग्य शेशदर प्यठ दुखालो, गोपालो अज़ वलो सोन।।
दीनु दयालु हीनु कृपालो, धर्मस खुर कर्मुन कास।
नतु मोदुर मस ओदुर ज़ंजालो, गोपालो अज़ वलो सोन।।
वेलु मेलुनुक फ्वजि संगर मालो, शामु प्रभातु कर अथुवास।
'सास भास्कर' भास प्रथ कालो, गोपालो अज़ वलो सोन।।



शामु रुपु वलो आम लोलुये

शामु रुपु वलो आम लोलुये।
बु करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

शेरि मोर मुकटु विराजमान, पीताम्बर धरु सर्वशक्तिमान।
म्वखतुकेश केश रम्भोलये, बु करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

गूर्य गूपी वॅछ्य गॉव जानावार, च्वयि शीथ लछ ज़ीवन व्यसतार।
राधा कृष्ण कृष्ण बोलुये, बु करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

अथुवासु प्रथ ॲकिस खेलान रास, अकरय कुनुय ज़नतुभासान सास।
बे रंगु रंगु सांवोलुये, बु करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

पोशु अंबरन बॉबुर ज़न व्यूर छारान, यॅम्बरज़ल ज़न अंबर हारान।
जानवर करान कलोलुये, बु करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

रोशु रोशु गोशन पोश वथुरान, पंपोशु नेत्रव हर्ष वर्शान।
होशु पोशुनूल येरि ओलुये, बु करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

सिरयि च़ँद्रम बेयि तारागन, प्रेदिख्यन करुवन्य छि बिन्द्राबन।
मेलि खेलि रासु मंडोलुये, बु करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

दीवी अछु रछु तारा गन, गूपी बॅनिथ आयि बिन्द्राबन।
अर्मान छुख यॅच़कोलुये, बु करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

ब्रह्माहस प्यठ रेयि सॅयि हर्शन, आकाश़ देवता पोश वर्शन।
शंकरस यि वुछिथ मन डोलुये, ब करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

शख प्योस क्या सना छा यि महाराज, सरताज द्रौपदी रछ़ वुन लाज।
ज़गि हुन्द ताजि मलोलुये, ब करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

सर करनुय तस सु सरदार प्यव, गूपिया बॅनिथ ब्रज़ भूमी गव।
ओम भूर भुवः दिवान ज़ोलुये, ब करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

शे र्‌यथ राथ गॅयि छुसन कॅंहति बास, रासस मंज़ वुछुन निराभास।
कृष्ण जू म्वरली वोलुये, ब करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

सुपर्श किन्य ऑस्य यॅच़ हर्शन, विर्मश ह्यथ नेत्रव वर्शन।
चंद्र मंड़ल ज़न म्वखत ब्योलुये, ब करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

साम स्वर काम दीवुन यि संवाद, आकाश़ पाताल सुय ब्यंद नाद।
नच़ान ह्यथ ध्रुव मंडोलुये, ब करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

योग बल दल दल द्यान दॉरिथ, तल प्यठ दशम द्वार व्यसतॉरिथ।
सॅहसर दल ग्यान दीप ज़ोलुये, ब करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

ज़न्म ज़न्म छ़ारान गोम यॅच़काल, वाँस सूर प्रारान छॅत्य गॅयम बाल।
लोल आम छुम गोमुत होलुये, ब करय ख्वनि मंज़ोलुये।।

व्यकुन्ठुक भास बिन्द्राबन, 'सास भास्कर' छु नोन परिपूरन।
म्वख हाव द्वख ति कूत च़ोलुये, ब करय ख्वनि मंज़ोलुये।।



द्रायि राधा ह्यथ गूर्य बाये

द्रायि राधा ह्यथ गूर्य बाये।
मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

शामु रंगु नुय मंज़ सुबह शामन, पोशु ज़ॉच़न मंज़ जंगलन।
ब्रॉच़ छ़ायन तॅम्य संुजि राये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

छ़ेत्य व्वज़ुल्य नील्य रंगु रंगु पोशन, रोशु गोशन नालु रटुहोन।
होश रूदुस नु तमि अभिप्राये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

प्रान अपान पर तय पानय, गोसु मॅशरिथ गॅयि यकसान।
शुन्य त्रॉविथ शिव दारुनाये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

द्वादशांत चे पॅत्यमे द्वारय, ज़ूनि डबि बीठ रोटुन वोन।
शांत प्रकाश तति वुछु नाये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

गटु कति तति अटल गाशिय, शोडश कला नोन सु प्रकाश।
अमर्यत ब्यंद शोशि कलाये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

अनुहत शब्द मुर्ली वाधय, नादु ब्यंदुक ज़ीरु बंम साज़।
गोस कनन मनुवनु आये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

अँद्र न्यबर्य सु सुंदर शामय, रुमु रुमु राम रमान।
ओम सूहम परान कृष्णु राये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

यूर्य अनतन रूद कथ शाये, वनु वनुनय ननि ख्वतु नोन।
द्वारिकायि छा किनु मथुराये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

सॅमिवी नेरव फेरव वनुनय, कॉल्य मरव क्या छु अरमान।
रोशि पोशु नूल द्वह गछ़ि छ़ाये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

सॅमिवी सॅखियव वॅन्य दिनि नेरव, बालु पानय सु नालु रटुहोन।
राधा कृष्ण कृष्ण राधाये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

ब्वद राधा ब्रॅच़ गूरुय बाये, प्रॅच़ प्यथ स्वरान कृष्ण राधा।
पान नावान ग्यानु गंगाये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

बावु द्वद थॅन्य नेरव कुनुने, पानु दय फेरि खॅरीदार।
युथनु परमानु आसन छोन्य त्राये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

गुल तु गुलज़ार गासु आबशारय, रूस्य बोम्बुर बॅयि जानावार।
कृष्णु गूपी परान भाखाये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।

मेलि सौदा सास कर गेलन, खेलि अथुवास कॅरिथ रास।
'सास भास्कर' सु प्रेम माये, मायि कृष्णुनि दिवान वॅन्य।।



उदव लोल़ु नाऱ् दॅज़ सॉन्य तन

उदव लोल़ु नाऱ् दॅज़ सॉन्य तन।
च़ु वन कर वाति मन मोहन।।

वनन वॅन्य दिथ छि लायान नाद, कनन गोस ना सु म्योन फॅरयाद।
सु छा मथुरायि बिन्द्राबन, च़ु वन कर वाति मन मोहन।।
द्यनस रातस क्षनस सातस, छि प्रारान शाम़ु प्रभातस।
च़ौलुय त्रॉविथ मुह्यिथ तन मन, च़ु वन कर वाति मन मोहन।।
नच़ान अथ़ुवास कॅरिथ द्यन राथ, बजावान बन्सरी एक हाथ।
सु शाम़ु प्रभात सुबह शामन, च़ु वन कर वाति मन मोहन।।
वनन वॅछ़्य गॉव वॅन्य दिवान, गरन मंज़ गूपी रिवान।
बरन प्यठ तिम प्रारि प्रारान, च़ु वन कर वाति मन मोहन।।
वज़ऩु रोस योस़ु वज़ान स्वय तार, दज़ऩु रोस युस दज़ान लोल़ु नार।
बनुन दीपक मल़ुहार तत क्षन, च़ु वन कर वाति मन मोहन।।
अॅग़ुन ज़ल बेयि पवन बुतरात, च़राच़र ज़ीव द्यन क्यहो रात।
स्वरान कृष्ण़ुय करान धन धन, च़ु वन कर वाति मन मोहन।।
कॅरिथ नित्य रास़ु मंडलुक ग्यूर, बॉबुर अम्बरस तुलान तति व्यूर।।
दिगम्बर 'सास भासकर' ज़न, च़ु वन कर वाति मन मोहन।।



ओम परुवुन हंमसु ताजदार

ओम परुवुन हंमसु ताजदार।
कमि वनुकुय जानावार।।

ज़ालु लगि ना सुय अनका, मालु गँड्हस छुम तमन्ना।
नालु रटुहन सुय बालुयार, कमि वनुकुय जानावार।।
कोछ़ बु दिमुयो हा कावो, गछ़तु वंनतस दी दर्शुन।
वछ़ि वाँलिजि बावस असरार, कमि वनुकुय जानावार।।
पोशु नूलव पोरूय हम सू, कुकिलु बोलान गोविंदु गू।
हरु म्वखु छा किन हरद्वार, कमि वनुकुय जानावार।।
प्यठ गोशन रॅटुनम जाय, कॉल्य पोशन पेयि मा हाय।
व्वन्दु हँदेरेस तु रोशि च़ॅल्य यार, कमि वनुकुय जानावार।।
खत बु लेखस हटि के रतु, ज़ॉविलि क़तु सतु शूबि दार।
यी नतय छस बु दावादार, कमि वनुकुय जानावार।।
बॉल्य अनतने दूरि मा कॉल्य, ऑल्य जिगरस गॅयिमय परु कॉल्य।
नॉल्य जामु तस छि ज़रकार, कमि वनुकुय जानावार।।
हमसु पखवुय पतु लारोस, प्रारि प्रारोस डंड़क वन।
द्रह दरि गछ़ि सोरि ल्वकचार, कमि वनुकुय जानावार।।
दर्दु सोज़ुक संतूर साज़, सासि पर्दि ग्योव कोसतूर्य राज़।
बुति ती ती वनान क्वलुतार, कमि वनुकुय जानावार।।
'भास्कर' चेन्तन सासन मंज़, रुमु रुमु खास छु भासॉनी।
ललुवुन छुम सुय सीरि असरार, कमि वनुकुय जानावार।।



गो वर्दन् गिरिधर

गो वर्धन गिरिधर।
सुन्दर सु शाम यियि कर।।

गँड्होस त्रौट्य् तु मालय, बरहोस प्रेमु प्यालय।
जर्होस चूनि लालय, कर्होस प्रणाम यी कर।।
सुन्दर सु शाम यियि कर।।०।।

वुछ्होन अँछव मनोहर, लछु नोव सु शामु सुन्दर।
गछि कुठि कर्होस च़ामर, रुमु रुमु सु राम यी कर।।
सुन्दर सु शाम यियि कर।।०।।

मनविथ चु गछ़तु अनतन, रूद कति खँटिथ रँटिथ वन।
छुम दारि ऑश अँछ्यन, सँर्य गछ़ि तमाम यी कर।।
सुन्दर सु शाम यियि कर।।०।।

यी ना सु सोन आदन, कन थावि लोलु नादन।
अँज़रावि लॉन्य वादन, गँज़रे सुदाम यी क़र।।
सुन्दर सु शाम यियि कर।।०।।

कर वाति सु सोन मोहन, लोलु नारु दँज़ मे हन हन।
शोलान यि नार छु दरतन, पॅ़हलि तालि ताम यी कर।।
सुन्दर सु शाम यियि कर।।०।।

खेलि रास तेलि येलि राग, मेलि दय छु धन धन भाग।
'भास्कर' सु वेलु तथ ज़ाग, योद गेलि आम यी कर।।
सुन्दर सु शाम यियि कर।।०।।



ल्वलि ललुवथ थावथ सुलुनॉविथ

ल्वलि ललुवथ थावथ सुलुनॉविथ।
वलुसॉ सोन शामु स्वंदरो स्वंदरो।।

पवुनकि नारु तन छसयो नॉविथ, छुमवुहान लोलु तॊन्द्रो तॊन्द्रो।
श्रवनु शॆशकलि पान शॆहलॉविथ, वलुसॉ सोन शामु स्वंदरो स्वंदरो।।

रंगु रवकन प्रंग वथुरॉविथ, नॆन्द्र वुज़तु राज़ु यँद्रो यँद्रो।
कॆह नो मंगुयो गछ़तम पान हॉविथ, वलुसॉ सोन शामु स्वंदरो स्वंदरो।।

हर्दु ज़र्दी पोश फ्वलुनॉविथ, पोशु नूल मा हँद्रो हंद्रो।
गोविंद गू वखुन परनॉविथ, वलुसॉ सोन शामु स्वंदरो स्वंदरो।।

नाद लायय वादु याद पॉविथ, लोल आम कृष्ण गँद्रो गँद्रो।
प्रेमु द्रूद थॅन्य गछ़य ख्यावनॉविथ, वलुसॉ सोन शामु स्वंदरो स्वंदरो।।

रोशि मो रोशि होश रावुरॉविथ, पोश लागय ग्वंद्रो ग्वद्रो।
कीनु भावय सीनु मुचरॉविथ, वलुसॉ सोन शामु स्वंदरो स्वंदरो।।

हमसु पखवुय पान वुफुनॉविथ, ब्रह्म रन्द्र मन्दिरो मन्दिरो।
'सास भास्कर' रास खेलुनॉविथ, वलुसॉ सोन शामु स्वंदरो स्वंदरो।।



गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग

गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग शामु रंग आकार छा।
न्यर द्वंद शिव नादु ब्यंद छा सिरियि चँद्रम तार छा।।
द्वख चलि सनम्वख सु वुछ होन स्वखु म्वखु द्यव नेरि नोन,
म्वखु म्वखु छा ग्वरु म्वखु छा हरु म्वखु हरद्वार छा।
गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग शामु रंग आकार छा।।
वोंत तस छुनु ब्राँत्य करुवुन सूंत्य पज़िह्यस वातनस,
हर्दु ज़र्दी नव बहार सुय गुलज़ार छा गुलनार छा।
गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग शामु रंग आकार छा।।
हॉर्य पर्बतु प्रारि प्रारोस शंङ्कराचॉर्य वॅन्य दिमोस,
तार सरु छा मार सरु छा खनुबलु खादुन्य यार छा।
गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग शामु रंग आकार छा।।
मार मटि छुस पान मारव मारुमोत नय वाति सोन,
अमारु तॅम्य सुंदि नार छु ललुवुन अंगार छा अबुखार छा।
गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग शामु रंग आकार छा।।
दीव कारन रेश्य मुनीश्वर बिन्द्राबनु वॅन्य दिवान,
द्वारिकायि छा मथुरायि छा गूकलय गिरिद्वार छा।
गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग शामु रंग आकार छा।।
तावनुन बाज़ार यि समसार खाम सौदा यावुनुन,
कर्मु फल सूरिथ छि चलु लार यकरार छा इनकार छा।
गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग शामु रंग आकार छा।।

बिन्द्राबनु नेत्य छु गिंदवुन शामु स्वंदर सुत्य असे,
द्यानु मय छा ग्यानु मय छा निर्वानि योगाकार छा।
गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग शामु रंग आकार छा।।
सासु नय सुत्य रास खेलान बासवुन क्षनु क्षनु छु नोन,
दास प्रारान करि अथवास 'भास्कर' तीज़ु दार छा।
गछ़तु बोंबरु वुछतु बे रंग शामु रंग आकार छा।।



बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब

बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।
चलय वेस्य गछ वनुस विलज़ार इम शब।।
हियन गव ॲर्यनि रंग लुयि लोसु प्रारान,
यँबुरज़ल चेश्मु पुर खुमार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।
दिमव छोह रोव करव द्रह तारु गिंदहव,
क्वलन पोन्य प्यूर कुल्यन सबज़ार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।
सु रसु रसु वेस्य चु अनतन हाल बावोस,
तसुंदे हावसु मे छुम वसि नार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।

च़ु प्रछ़तस म्यानि ज़ॆवि अदु गोसु मा गोस,
वुछान अॅछ लोसु दर इन्तिज़ार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।

गॅनीमत ज़ान तु ईं दम रोज़ि मा कॉल्य,
पगाह मा मटि छुय म्योन मार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।

ह्यमस ज़ाग नॉग्य रायस छॉग्य वालन,
सहान हीमाल ज़ॉहर्य मार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।

करान् लैला-लैला मसतु मजनून,
ज़िंदय दरग़ोर शॆबिबेदार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।

मे गोमुत सूर दूऱ्यर कोताह बु च़ालय,
बु छुस ललुवान तिमय अंगार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।

रिन्दव ग्युंदनाह कॊरुख ज़िंदु पानु मरुनुय,
परान मंसूर अन बरदार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।

तवय 'भास्कर' दिवान सासन अन्दर नाद,
छु अज़लुक पानु वॊन्य मिल च़ार इम शब।
बहार आव कोनु आव दिलदार इम शब।।



सुर्दशन च़ॅख़ुर ह्यथ नोन नेर

सुर्दशन च़ॅखुर ह्यथ नोन नेर धर्मुक शान पैदा कर।
यिथिस वकतस चु शक्तिमानु तिथी सामानु पैदा कर।।
सनातन धर्मुचुय् रछ लाज पनुन प्रन वारु व्वन्य पाव याद।
अर्धमुच गाल व्वन्य बुनियाद सु गारगी यान पैदा कर।।
गुलन खारन कुनुय माने अन्यायस न्यायिकुय तकरार।
पुण्यस पापस गोमुत यक सान तम्युक अवज़ान पैदा कर।।
क्वटम्ब योवन धनुक मुह मद अनर्थुक यॅच़ गोमुत अभिमान।
सिर्यु प्रंच़ड दंडुक कूप तिमन अवमान पैदा कर।।
परित्रानाय साधूनाम विनाशाय चु दुष्क्रताम।
धर्म संस्थाप नार्थाय अदु पनुन पान पैदा कर।।
सनातन वेदु मुर्यादा ब्रंमाडस हॅरि ब्वनु प्रखुटाव।
दुरात्मन द्वर्ज़नन हुन्द क्षय ब यक आन फ़ान पैदा कर।।
दयानन्द शंकराचार्य महात्मा बुद्व विक्रम वीर।
सुवेना दत्त ललत प्रवेरश सिन्धेमान पैदा कर।।
गुरू गोबिन्द नरसिंह रूप नानक देव शिवाजी।
सिद्धि ऋद्धि ह्यथ सत् ग्यान सदा सन्निदान पैदा कर।।
सनक सतुरॅश तु व्यास गोतम अगस्त नारद तु बॅयि भारदवाज़।
सनानत वीदु कुय प्रखच़ार क्रॅयायव सान पैदा कर।।
फरशु पयठु अर्शसुय तामथ सुरोशन गौशुनय करुनाव।
रियाकारन सितमगारन उलट पुल्टान पैदा कर।।

नवन पीठन अन्दर आर्डर नवन नाथन हुन्दुय सामराज।
तन्निक्य ज़िमुवार नव स्यद्ध प्रदान हनुमान पैदा कर।।
सर्प बदख़्वा तु बिच रामु हून्य यिथिस समयस तिमन फ़ान कर।
बुनिल्य गगुरायि त्रट्ट तूफान तलुक पयठ फ़ान पैदा कर।।
यि गट्ट छ़ट्ट छ़ाय कास अंधुकार प्रत्यक्ष बास सास 'भासकर' नोन।
बहार हरदुचि ज़र्दी हाव हज़ार दास्तान पैदा कर।।



रट्टहथ बु नालु व्वलु सोन सालु कृष्णा

रट्टहथ बु नालु व्वलु सोन सालु कृष्णा।
गंडय त्रोट्य तु मालु त्राव मलालु कृष्णा।।
नेन्द्रि हति गछ़तु बेदार चुय स्वंदर शाम।
गँडिथ कोसतब बेयि वनुमालु कृष्णा।।
चोतुरबोज़ मोर मुकट्ट चॅक्रदॉरी।
वॅलिथ पीतांबर दुशाल कृष्णा।।
पनुन प्रन योगु क्षेमुक याद चुय पाव।
मँजिल दूर्याम द्वहगोम बालु कृष्णा।।
थॉव्य ब्र्य ब्र्य द्वद थॅन्य प्रेमु माये।
चतम श्वदु बावु ऑम्य ज़ॉम्य प्यालु कृष्णा।।
वनन वनुवान वॅन्य दिथ नाद लायय।
चु मनु मथ्रायि मारान डालु कृष्णा।।

वॅविथ ब्योल मवखतु कुय जंगल फॊलिथ आय।
ब्रजुक्य तमि हालु गॅयि निहालु कृष्णा।।
सतुच अथुवास दासन बास ननि नोन।
दिवान 'भास्कर' छु लोलु चि नालु कृष्णा।।



गंडय त्रॊट्य तु मालु अज़ सोन सालु यिखना

गंडय त्रॊट्य तु मालु अज़ सोन सालु यिखना।
ज़गत रखिपालु कॅन्या लालु यिखना।।
पनुन प्रन पाव याद नोन बोज़ फॅर्याद।
सनातन धर्मु पुछ्य गोपालु यिखना।।
कुसंगु किन्य रंगु रंगु तंग आयि बुतरात।
नरसिंह अवतार येमि कलि कालु यिखना।।
छि प्रारान प्रारि गूपी गॉव छ़ारान।
बॅनिथ मस्तानु मच़्चु मुतवालु यिखना।।
नेत्र वॅथरय वतन मथुरायि गोकुल।
कला पूर्ण चु कंसुनि कालु यिखना।।
छि फेरान जंगलन न्यंगलान विरह नार।
वुछान आकाशु नतु पातालु यिखना।।
च़े प्रारान वाँस सूर छनु काँसि हुंज़ कल।
वुछान फिर्य फिर्य वसान अशिच़ालु यिखना।।

फौलिथ वुन्यक्य़न छु लोलुन बाग़ शोलान।
हर्दु ज़र्दी अदु अकालु यिखना।।

वॅरिथ अथुवास सतुकुय रास खेलव।
च़ु नौन 'सास भास्कर' निरालु यिखना

***

कुनि यिखना यावन च़ूरय लो लो

कुनि यिखना यावन च़ूरय लो लो।
ख्वनि ललुवथ करय बु गूर गूरय लो लो।।

नॆन्द्रि बेदार वॅरथस तु त्रॉथम रव।
वनन वनुवान च़ेय यँद्रनि हूरय लो लो।।

प्यालु बरुहय द्रह पोंशि यितु सालस।
तन बु नावय क्वंगु कोफूरय लो लो।।

शमह रोयस पथ च़ेय गथ करु ना।
पान आलुवय जन पोंपूरय लो लो।।

लोल्य बु करुहय म्वल्य कुनि मेलरवना।
आदम खावु अॅशुकनि चूरय लो लो।।

मछ़ि मछ़ु बन्द हच़ि कुय छुख च़ु बावोट।
मनके च़ूरु कनके दूरय लो लो।।

कम शाहबाज स्वंदर तु बेयि ग्वंदर।
ज़ालु लॅग्यमुत्य छि हूर मस्तूरय लो लो।।

बॉज़्य गॉरी नाज़ कम छुख चु हावान।
बाज़ अनुहथ साज़ु संतूरय लो लो।।
'सास भास्कर' छु पूरिपूर नेत्य चमकान।
तमि नूर दोद कोहितूरय लो लो।।



मधुसूदन श्वदु द्वदु चूरय लो लो

मधुसूदन श्वदु द्वदु चूरय लो लो।
ख्वनि ललुवथ करय बु गूर गूरय लो लो।।
मनु मोहनु वनि कुनि कनि यिखना।
म्वनि वन्दहॉय नन्दु किशोरय लो लो।।
प्रान अपान अर्गु बर्गु पूज़ करुहय।
अहंकार ज़ालु दीप कोफूरय लो लो।।
प्रंग वथरय मनुक्यन रंगु रवुकन।
तन बु नावय कोंगु कोस्तूरय लो लो।।
नालु रटुहथ अज़ सोन सालु यिखना।
मालु गंडुहय रतनु होंज़ूरय लो लो।।
कुकिलु वनुवान वनुवनु गोविंदु गू।
होशु पोशु नूल प्रेमु कोसतूरय लो लो।।
प्रेम साज़ुच आवाज़ नादु ब्यंद तार।
दर्द सोज़ुक बोज़ संतूरय लो लो।।

दार अवतार भूमि वाल पापुन बार।
मुह कनसस कर चूर् चूरय लो लो।।
ही यावुनुन्य श्रावनु आयि फ्वलनस।
ग़ु ग़ु चानि प्रेमु बोम्बूरय लो लो।।
हूर् वनुवान च़ेय पतु नूर बॅरिथुय।
मचु मसतानु चेश्मु मखमूर्य लो लो।।
नॉल्य वनुमाल हटि त्रोट्य् तु कोस्तभ मन।
शेरि मुकटु वॉल्य कनुदूरय लो लो।।
सतुकुय रास अथु रठ च़ठ मु अथुवास।
'सास भास्कर' बास पूर् पूरय लो लो।।

* * *

वनतु पोशु नूल ओश यीनाये

वनतु पोशु नूल ओश यीनाये।
रोशु कति रूद छ़ाये वन।।
होशि वॅजिस तॅम्य सुंज़ि माये, जोशि तमि दरियाव चमन।
पोशु कोत यिम छि लॉनिन्य न्याये, रोशु कति रूद छ़ाये वन।।
सोलु सिंगार लोलु पॉरुनाये, द्रय चॉन्य छम नावु ही तन।
शाह परवुय तोर वुफुनाये, रोशु कति रूद छ़ाये वन।।
क्वंगु रंग गोमु रंगु रिवुनाये, प्रंग वथुरोस रंगु रवुकन।
संग दिल क्या सु बेपरवाये, रोशु कति रूद छ़ाये वन।।

रूशिथ गोम अनोन सुलु नाये, ल्वलि मंज़ुल कॅरिथ ललवोन।
न्यन्द्रि ह्यौत यँदुर न्यन्द्रि वुज़ुनाये, रोशु कति रूद छ़ाये वन।।
गॅयस बेदार रूदुम छ़ाये, दारि औश वसान छुम नु तथ छ़्यन।
आलमि आब तवु गछ़िनाये, रोशु कतिं रूद छ़ाये वन।।
सुलि द्रायस तॅमि संज़ि माये, ब्रम द्युतनम मंज़ गामन।
पिलु कोर तौत वेलु बोज़ु नाये, रोशु कति रूद छ़ाये वन।।
स्वंज़ु पॉरहस च़्वंज़ु तय दाये, नीलु नागय छुस बु ज़ागन।
दूरि कॉफ़िल द्रह गछ़ि छ़ाये, रोशु कति रूद छ़ाये वन।।
बॉल्य अनतने रूद कथ शाये, कॉल्य मा दूरि यूर्य अनतन।
बालि बालु पान कोरनम ज़ाये, रोशु कति रूद छ़ाये वन।।
गहान शेश तु रव गाह वुछनाये, गाह छु आकाश गाह पातालन।
'सास भास्कर' गाह तेलुनाये, रोशु कति रूद छ़ाये वन।।



यनु छ़्यनु गोख तनु छसयो बु थारन

यनु छ़्यनु गोख तनु छसयो बु थारन।
छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यियिे।।
पतु लारन यिमन शाह सवारन, हमसु पखवुय वुफन गॅये।
पर लूसिम कर छस प्रारन, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यियिे।।
कुत्य तंबुलॉव्य येम्य समसारन, आय कति सनु कोर कुन गॅये।
जाय वुछनय चाय अंद मज़ारन, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यियिे।।

वेस्य गिन्दहव नबुचन तारन, लोलु नारन वस मे ज़ॉज्ये।
रोबु खानु प्यठ पोत ज़ूनि छ़ारन, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यिये।।
रुमु रुमु तोसु लूसुस च़ारन, ओमकारुन पन मे खोरमये।
प्राण शुमरिथ द्यान छसयो बु धारन, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यिये।।
नॉग्यराय ज़न डुंग दिथ छ़ारन, छ़ॉग्य वालन ज़ागि ज़ागुये।
आगरु प्यठ सागर फ्यारन, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यिये।।
लोलु तोदंरस अँदरी संदारन, जामु स्वर्गुक्य स्वंदर मे पुर्यमये।
तमि नारु नूर लल छस बु हारन, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यिये।।
शवन ज़ॉलिथ शेश तु रव कारण, शेश कलि हुन्द शेहजार छुये।
तमि गाशु लय त्रनवय कारण, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यिये।।
तथ कुनिरस क्या सन्यर व्यच़ारन, सनि खोतु सॅन्य वॅन्य मे दित्यमये।
आकाशु प्यठ पाताल फ्यारन, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यिये।।
खाम सोदा प्वखतु बाज़ारन, यावुनुन म्वखतु म्वलु वोलुये।
कम शाहबाज़ बाज़ गॅयि हारन, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यिये।।
'सास भास्कर' नोन छु गाश दारन, रातु क्रीलन अनिगटु छेये।
गाटु गाटस गटि गाश गारन, छसयो प्रारन द्यवु यूर्य यिये।।



पथ वनु कोर विगिन्यव रोव

पथ वनु कोर विगिन्यव रोव।
पोरयि कुकिलव गोविंदु गू।।

स्वर्गु अछ़ु रछ़ु व्वछ़ु लोलु हचु, गोकुलु मचु गॅयि नच़नस।
स्वय रच़ना नारदन ग्यॅव, पोरयि कुकिलव गोविंदु गू।।

ती रेशुनुय गव कनुनय, मनु सरु लॅग्य अन परुने,
लोलु नारु सूर मोलुख तनुनय, वनुनय च़ाय द्यान स्वरने।
अहम त्रोवुख पोरुख ओम सू, पोरयि कुकिलव गोविंदु गू।।

वुज़ान यिमनुय छु दर्दुक शोक, च़ॉटिथ सथ पुर्द दामु दॅरियाव चोख,
अनुग्रेह आलव तोरय गोख, यीव्रो यीवो छुनु केह रोक।
दय टोठ्योख ज़य ज़य छू, पोरयि कुकिलव गोविंदु गू।।

वॅरिथ प्रथ कॉसि सुत्य अथुवास, गिंदान नेत्य गूपियन सुत्य रास,
छु रुमु रुमु शामु स्वंदर सास, बहन सासन योगन छुनु भास।
विशवास कोर ज़न गछ़ान अख च़्यूह, पोरयि कुकिलव गोविंदु गू।।

बन्योमुत ब्रज छु वैकुंठ द्वार, नमान तति सिरयि चँद्रमु तार,
समान वृच़ गूपियन मिलच़ार, दमान दमु दमु छु लोलुक नार।
सु व्यवहार वनतु कथ क्या ह्यू, पोरयि कुकिलव गोविंदु गू।।

सिरयि चँद्रम् गोमुत मिलच़ार,   नॅमिथ दीवी दीव यकबार,
सॅमिथ फॅल्यमुत्य छि गुल तु गुलज़ार, अंमबर हारान बोंबर जानुवार।
परान श्री कृष्ण कृष्ण गू गू,   पोरयि कुकिलव गोविंदु गू।।

छु कर केंह भास खास चिन्मय, असान रसुमय वसान तनुमय,
मशित पर तु पान गोमुत लय,   सु 'भास्कर सास' तति व्वदय।
छु तेलान अँदरु न्यबरय सूः,   पोरयि कुकिलव गोविंदु गू।।



रोशु रोशु ओश म्योन यूर्य अनतन

रोशु रोशु ओश म्योन यूर्य अनतन,
बरुहस पोशु तोन यूर्य अनतन।
बालु गूपाल श्री नन्दु नंदन।।
शामु रूप दारुवुन यूर्य अनतन।।०।।

द्वारिकायि छा किनु मथुराये,
व्वथुरोस वति पान जायि जाये।
मायि स्वर वायि वुन यूर्य अनतन।।
बरुहस पोशु तोन यूर्य अनतन।।०।।

बॉल्य बालु पान तस पतु रोवुम,
द्वह गोम बॉल्य वुड़ालु प्रोवुम।
लालु छ़ालु मारुवुन यूर्य अनतन।।
बरुहस पोशु तोन यूर्य अनतन।।०।।

बॉल्य अनतने कॉल्य मा दूरे,
थनि चूर सोन कति सनु रूद चूरे।
गोसु मा गोस म्योन यूर्‌य अनतन।।
बर्‌हस पोशु तोन यूर्‌य अनतन।।०।।

सॅमिवी सॅखियव खेलव रास,
अथुवास करि वरि करि सोन पास।
काचु ज़ूनि चलि ग्रुहुन यूर्‌य अनतन।।
बर्‌हस पोशु तोन यूर्‌य अनतन।।०।।

कृष्णु कृष्णु वॅरिथुय लायोस नाद,
राधा कृष्ण बोज़ि सोन फॅर्‌ययाद।
याद पॆयस वादु प्रोन यूर्‌य अनतन।।
बर्‌हस पोशु तोन यूर्‌य अनतन।।०।।

गोपालुस सॅनियास लागोस,
पातालु नागबलु ज़ागि ज़ागोस।
ल्वलि मंज़ ललुवोन यूर्‌य अनतन।।
बर्‌हस पोशु तोन यूर्‌य अनतन।।०।।

अन्दिहे न्याय कासि बन्धन,
व्वंदि मंज़ बासि देवुकी नंदन।
वंदुसुय वॅबीलु क्रोन यूर्‌य अनतन।।
बर्‌हस पोशु तोन यूर्‌य अनतन।।०।।

दतु गॅयम तस पतु वतु गारान,
हतु ततु सुय छुम नतु मारु पान।

मतना सु मोत सोन यूर्‌य अनतन।।
बर्‌हस पोशु तोन यूर्‌य अनतन।।०।।

लोलुर व्वंदुकुय सीर बावोस,
नरि आलवान लरि पान सावोस।
लोल आम बोंबुरुन यूर्‌य अनतन।।
बर्‌हस पोशु तोन यूर्‌य अनतन।।०।।

शेश तु रव नेशु दिन ननि ख्वतु नोन,
हिशु रोस कीशव रास खेलुवुन।
'भास्कर सास' गुन यूर्‌य अनतन।।
बर्‌हस पोशु तोन यूर्‌य अनतन।।०।।



कसवनु ज़ीरु बम सीर ओसमय

कसवनु ज़ीरु बम सीर ओसमय।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।

शमुदमु धारनायि द्यान दोरु मय,
प्रच प्यथ वॆंच़ गूपी वखुनान।
राधा कृष्ण कृष्ण वाद च़ोर मय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।०।।

गनुपतयारु चे नावि ब्यूठ मय,
शुराह यार शिव पूर्य फ्युर व्वलसान।

शाह पर लूसिम तु गाह ड्यूठमय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।० ।।

नपु नपु करुवुन छ्यपु द्योवमय,
दोपहम केवल पननुय पान।
वुफु कोर छोपि छ़ारि वुफुनोवमय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।० ।।

पवनुकि नारु सुत्य पान तोवुमय,
दज़ुवुनि शाहपर करनस मान।
शोष्य कलु ज़लु रसु शोहलोवमय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।० ।।

सतिये सतुसोस तोसु च़ोरमय,
बालु पानु द्रायस गोलुम पान।
दम दिथ ओमकुय पन खोरमय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।० ।।

लोलु नारु मंज़ वारु पान ज़ोलमय,
सीतायि मायि ज़न नाज़नीन पान।
कलि गॅयम हॅज कॉर मल गोलमय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।० ।।

कोनु कोनु क्वनु यियि म्वनि लोसमय,
र्‌वनि मुच़रिथ छ्वन्य छुमनु बासान।
कोत गव दय येत्य वुन्य ओसमय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।० ।।

गोपालस सॅनियास लोगुमय,
सास तनि पूरुम व्वलास शूबि सान।
पातालु नागुबलु ज़ागि ज़ोगुमय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।०।।

पर तु पान मॅशिरिथ स्वर गूनमय,
ल्वलि ज़न ललुवुन सुय ललुबान।
नंगु पानु नचुनस रँग ज़ोनुमय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।०।।

दशु नादु मुरली वाद बूज़मय,
हिशि रोस कीशव निशि ज़ान पान।
राधिका श्वद्व ब्वद मे तूर्य सूज़मय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।०।।

ज़ागरत स्वपुन आदि अंत ओसमय,
मंध्यानुच संद नादु ब्यंद ज़ान।
'सास भास्कर' व्यकास बोसुमय।।
हम सू रुमु रुमु छस ललुवान।।०।।



ग्यान दिम पान हाव रटतो नालो

ग्यान दिम पान हाव रटथो नालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।
गथ दिम पथ रछुम सत श्री अकालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
सत् ग्वर् पादन वंदहय कपालो, सत् च़्यथ आनंद निरालो वे।
गणपति सत सॅती हुंदि द्वार पालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
दासन पास कर दीनु दयालो, सास रवु भास न्यरमालो वे।
ईश्वर महीश्वर सर्वु रक्षुपालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
पिलु कोत द्रह दरि गव संगर मालो, बालु पान छुम छ़्वटन बालो वे।
आय आम सोरान छेत्य गॅयम बालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
पीतांबर दरु अंबर दुशालो, मोर मुकटु चूनी लालो वे।
शेरुहय तु पॉरुहय भक्ति म्वखतु मालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
खीर खंड नाबद बरुहय थालो, सालु वलु त्रिज़गत पालो वे।
डालु मतु दितु व्वन्य मो रठ मलालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
दूर्यरु सूर गोम कोता च़ालो, रेह नेरि फॅटिथुय पातालो वे।
आर छुय नु वार छुम नु नारु पान ज़ालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
भवुसरु आवुलनि येमि ज़ंजालो, तार दिम बडि कृपालो वे।
सेर गोस नेर नोन मो मार छालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
प्रथ कालु पथ रछ येमि कलि कालो, रुति फालु हाव स्वकालो वे।
कॉल्य कालु नेर नोन मुह मद गालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
ग्यानुक प्याल् चाव माला मालो, ध्यानुक दीप प्रज़लावो वे।
मस चथ रसु रसु बन मतवालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।

सतुची तरुवार ह्यथ च़ु प्रेति पालो, दुष्ट द्वर्ज़न असत गालो वे।
जय जय दिग् विजय जग संबालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।
यॅच़ काल गव व्वन्य प्रारु कूत कालो, हारान अशिने च़ालो वे।
'सास भास्कर' छुय दिवान प्रेमु नालो, शामु रूपु रामु दयालो वे।।



व्वंदु यॅंदु रव मन फ्वलुनॉविथ

व्वंदु इन्दु रव मन फ्वलुनॉविथ।
प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।

राज़ इंदर गव छॅंद्रॉविथ, दिह मंदिर ज़न परमु शिव।
शामु सुन्दर न्यन्द्र पॉविथ, प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।
शामु प्रभात अथु मिलु नॉविथ, मंध्यानुच संद बासान।
सोपुन ज़ागरत विप्नु श्रोपरॉविथ, प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।
निर्वासिन रास खेलुनॉविथ, शक्ति पातुक भक्ति प्रभाव।
प्वखतु कारन मुक्ति द्यॉविथ, प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।
शुन्य नादु ब्यंद शिव बोलु नॉविथ, दासु स्वॉमी भाव कॅरिथ अथुवास।
बासु अवबासु खय कासुनॉविथ, प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।
न्यन्द्रि हच़ुनय मन तंबुलाविथ, न्यथु ननि ननि द्रायि बाज़ार।
तनु, मनु, धनु, गरुबार त्रॉविथ, प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।
ज़्यव नारु सुत्य वारु छलुनॉविथ, गव तति तोर कॆंह नतु क्याह।
अॅछव बूज़ुन कनव वुछुनॉविथ, प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।

रूशिथ गव अनोन सुलुनॉविथ, ल्वलि मंज़ुलि ल्वल्य ल्वल्य करोस।
चूरि थावोन कस ह्यकोन हॉविथ, प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।
रिंदु गिदुंना छु समसार हॉविथ, ज़िंदु मरनुय व्वंदि चलि खय।
रिंदु पानय द्वंद भाव त्रॉविथ, प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।
च्यथ विकास मन फ्वलुनॉविथ, सास आदित्य प्रज़लान रव।
श्वास उश्वास 'भास्कर' प्रॉविथ, प्रज़ुनॉविथ कोर सनु गव।।



ओश छुम सुत्य सॅतिये

ओश छुम सुत्य सॅतिये।
तोशु ना बोश दय आम।।
पोश वथुरोस पॅतिये, रोशि मा रोज़्यम पाम।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
गिंदुनस गोमुतये, नंदु नंदन निष्काम।
यंद्रव व्वंदु फोलमुतये, मध्यानुच संद सुबह शाम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
वॅच़ म्यानि गूरुय बायि सॅतिये, छ़ंद्रेमचु सथ काम।
न्यन्द्रि हचु प्रारान तॅतिये, स्वंदर ह्मथ थनि जाम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
सु त्वतुनस आरुकृंतिये, धारुनायि प्राणायाम।
श्वास उश्वास मू दॅतिये, व्यास नारद सुदाम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।

फेरोस ब्रोंठ पॅतिये, नेरोस लोलु दय आम।
करु होस नालु मॅतिये, बालु पानय तमना द्राम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
केंह रेश्य छि मसतानु मॅतिये, केच़न पंथ दूर्याम।
केंह रेश्य छि मंदु छेमुतिये, केच़न प्वखतु गव खाम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
बालु पानु केंह छि द्रामुतिये, कॉल्य कालु लबन विश्राम।
रिंदु वुछतु ज़िंदु प्रापॅतिये, रुमु रुमु शाम रुप सु राम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
मुरलो शब्दु बॅरिमुतिये, रसु रसु ह्यसु व्यसुर्याम।
लय वुछिथ पय आम तॅतिये, अनहत शब्दु पैगाम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
शेष्य कलि ज़लु सॅगिमुतिये, निश्कलु व्वंद शेहल्याम।
कलि काल गॅयम सुमॅतिये, तलु प्यठ ती म्वलुव्याम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
कारण छि लय गॉमुतिये, गंदरव ग्यवान स्वर साम।
सुतोतुनस पानु सरुस्वतिये, सिद्ध मार्ग व्वलुग्याम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
शाह पर छि तति दॅदिमुतिये, वनुनस ज़्यव गॅयि थाम।
द्वादश द्वार उदमॅतिये, अख तु नव तति बास्याम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।
बास छुमनु रास ख्यूल मुतये, 'सास भास्कर' प्रज़ल्याम।
श्वास उश्वास ईकु स्तिथिये, शांत, तीज़, बीज़ प्रखट्याम।।
ओश छुम सुत्य सॅतिये।।

रुमु रुमु श्यामाकार

रुमु रुमु श्यामाकार।
छ़ांडोन बिद्रांबन तु लो।।
नादु ब्यंद तीज़ु ओमकार, माधव नंदु नंदन तु लो।
रुमु रुमु श्यामाकार।।
मनु मथुरायि आधार, व्वथुरोस मंज़ नेत्रन तु लो।
अतु गतु ज़न्मु ज़न्मु बार, सतु किन्य लगि तथ छ़्यन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।
द्वारिकायि हुंद सु सरदार, छ़ांडोन मंज़ तारुकन तु लो।
हरु म्वखु छा हरदुवार, नेरोस मंज़ मार्कन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।
गोकुल कुय गुल बहार, गोपाल सुत्य गूपियन तु लो।
गोवर्धन गिरिद्वार, ननि नोन सु शाम शामन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।
थनि च़ूर ह्मथ गूर्य यार, लूटान गूर्य बायन तु लो।
द्वदु लोटु अमर्यत दार, चावान सुत्य बाजन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।
कनुसुन कालु समहार, हमसू ओम ज़पन तु लो।
नादु व्यंद ज़ीरु बंम साज़, साधना छ़न व्यपन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।

यि छु तावुनुन बाज़ार, श्रावुन तोतु कलन तु लो।
यावुन ब्रम बॉज़्य गार, कॉल्य यिम दॉद्य बलन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।

सॅमिवी शक्ति बाज़ार, भक्ति म्वखतु म्वलुवन तु लो।
खाम सोदा प्वखतु कार, सु दाम ल्वलि ललुवन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।

मोर मुकट शूबिदार, गटि मंज सिरिय प्रज़लन तु लो।
हटि त्रेट्य मालु शूबिदार, बॉल्य छिस वॉल्य कनन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।

शाम पीताम्बर दार, अंबर मॅलिथ चंदन तु लो।
गमबर तीज़ु अंबार, असुवुन क्या सु प्रसन्न तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।

र्‌वनि ग्वड क्या श्रोनिदार, नचुनस गछ़न श्रोन्य श्रोन्य तु लो।
माँज़ि नम चँदुरमु तार, मन डोल अछु रछ़न तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।

बनसॅरी वादु व्यसतार, संसार सोर व्यसरन तु लो।
लोलु दिथ गोलु आकार, नचुनस क्या प्रसन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।

'सास भास्करु' तीज़ु दार, चमकान मंज़ दासन तु लो।
रासु अथवास प्रखचार, विकास नोन बासन तु लो।।
रुमु रुमु श्यामाकार।।



व्यकुन्ठ द्वार बिन्द्राबन तु लो लो

व्यकुन्ठ द्वार बिन्द्राबन तु लो लो।
शामा कार नंदु नंदन तु लो लो।।

व्वंदु यन्दु रव मन फ्वलुनॉविथ,
निष्कलु मन शशिकल दाम चॉविथ।
ज़ीरु बमकुय आबि ज़म ज़म छॉविथ।
नादु ब्यंदु योगु निद्रायि सॉविथ।।
प्रॉविथ थान स्यद आसन तु लोलो।
शामा कार नंदु नंदन तु लोलो।।०।।

दीव दीवी सॉरी शरणे आये,
वरि योद दातु करि सुय सोनुय पाये।
मायि वोलमुत रासुक छुख अभिप्राये,
नालु रटुहोन बालु पानु क्या छु परवाये।।
रूप गूपियन हुन्द छु दारन तु लोलो,
शामा कार नंदु नंदन तु लोलो।।०।।

वनुकी कुल जानवार बेयि आबशार,
वॅछ्य गॉव शुर्य पोशु अंबार।
कृष्ण बोलान वसुनस लोलु अँशुदार,
तनमय ध्यान मोच़िथ तद आकार।।
शामु स्वंदर मुरली बजावन तु लोलो,
शामा कार नंदु नंदन तु लोलो।।०।।

कर्मु फल दातु धर्मुक नोन सु अवतार,
सारादिसार द्वारिकायि हुंद सु सरदार।
हमसु नादय कनसुन कालु शाहमार,
बालु गूपाल स्वंदर गिरिवर दार।।
भार ज़गतुक वारु कासन तु लोलो,
शामा कार नंदु नंदन तु लोलो।।०।।

गोपाल सुय गोकुलकुय गुल बहार,
मॅल्य ह्यमुहन छिम कति म्वखतु तय ह्यार।
सीनु मुचरिथ वनुहॉस वीलु तय ज़ार,
नीलु नागस ज़ागुहॉस प्यठ हमसु द्वार।।
मुखतु गछ़ हव शुभ दर्शुन तु लोलो,
शामा कार नंदु नंदन तु लोलो।।०।।

गूरु करुहोस ल्वलि मंज़ सुय ललुनावोन,
दूर गरु होस जिगरस मंज़ सावोन।
चूरि प्रेमुक द्वद गलि गलि चावोन,
मनु वाजि प्यठ सुय नाव खनुनावोन।।
रोज़ि अरमान स्वर्गु हूरन तु लोलो,
शामा कार नंदु नंदन तु लोलो।।०।।

आदन बाजि प्रारान वादु सोन सूर,
ज़गतुकि राजि लोलु नारु गव ना सूर।
यूगियन हुंदि ताजदारु मो ह्यम दूर,
अँदरु नेबरय सु प्रकाश भास पूरि पूर।।
थनि चूर सानि मनु मोहनु तु लोलो,
शामा कार नंदु नंदन तु लोलो।।०।।

तिथि संवाद् पाताल बॅयि आकाश,
बरन् आमुत हॅरि ब्वन् शब्द् प्रकाश।
सु प्रकाशय ननि नॊन चित् आकाश,
सु अनुभव गमि तेलान शांत प्रकाश।।
'सास भास्कर' ज़न नॊन प्रज़लन तु लोलो,
शामा कार नंद् नंदन तु लोलो।।०।।



नंद्नंदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने

नंद्नंदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने
नंद्नदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।
मधुसूदन गोमय वध राखिसन करॉने,
स्यद् साधन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंद्नदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।
सुत्य गूपियन गोमय हीत् हीत् प्रीत बरॉने,
गीत ग्वंदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंद्नदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।
नंदन वन गोमय दीवन न्याय अंदॉने,
आनंद् घन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंद्नदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

गूर्‌य बालकन गोमय न्यूर दूर गॉव रछॉने,
ह्यथ गोवर्धन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

कामु दीनन गोमय शामु स्वंदर पालु ने,
पामु थवुने गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

तन नॉविथ गोमय वन फलुमूल च़टॉने,
लूट ह्यथ मन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

सिरियु ज़ोतन गोमय वीर्यु वान पान हावने,
म्वख फ्वलुवुन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

परि पूरन गोमय ग्रायि दूरन छु मारॉने,
मायि मोहनगोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

आरुवलन गोमै खारु जिगरस छु थावुने,
नार न्यंगलन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

स्वर्गायन गोमय स्वर असुरन छु मोहने,
मन व्यसुरन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

गूर्य बायन गोमय चूरि द्रूद थॅन्य छु ख्यवॅाने,
न्यूर गॉवन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

वृक्षभानुन गोमय वरि राधायि वरॉने,
वर करान गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

म्वखतु ववुनि गोमय प्वखतुकार ती छु लोनुने,
भक्ति रक्षन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।

रास खेलुनि गोमय 'सास भास्कर' छु फ्वलॉने,
निर्वासन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।
नंदुनदन गोमय बिंद्राबन गिंदॉने।।



शामु स्वंदर दर्शुन दियिना

शामु स्वंदर दर्शुन दियिना।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।

ज्ञानुक ताज शेरि दिथ सु महाराज,
युधिष्टर नॊन नेरि ज़गतुक ताज।
पालनस कर्म वीद त्रॆयि यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

अर्ज़ुन ज्ञानुक अस्त्र ह्यथ,
दुर्ज़न गालुवुन ब्रोंठ तय पथ।
गीतायि न्यरुनय बॅयि यियिना।।
हा उधव वनतो बॅयि यियिना।।०।।

मुंह मद कंसासुर काम क्रूध,
पूतना वासना गछ़ि नाबूद।
म्वकुलावि बॊज़ देवकी यियिना।।
हा उधव वनतो बॅयि यियिना।।०।।

वृॅच़ गूपी वॅछ्य् गॉव पालनस,
रंगु रंगु राक्षसन ब्योल गालनस।
ऑरत्यन कासुनि भयि यियिना।।
हा उधव वनतो बॅयि यियिना।।०।।

पनु पहुरि द्वारिका बनि तत्क्षन,
गारि युस नारस बनि गुलशन।
बालु यार सुदामय बॅयि यियिना।।
हा उधव वनतो बॅयि यियिना।।०।।

थमु मंज़ु औतार नरसिंह रूप,
दॉरिथ राक्षसन यॅच़ गव कूप।
प्रहलादुनि मालयवयि यियिना।।
हा उधव वनतो बॅयि यियिना।।०।।

श्रद्धायि अहल्यायि पाप गछि दूर,
अहंकार रावनस लंकायि सूर।

रुमु रुमु राम रमा यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

नारु पान ज़ालव मटि छुस मार,
अमार तॅमि संुदि अॅस्य छि बेमार।
मारमोत सोन वारु लयि यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

ल्वलि मंज़ु बाग सुय ललुनावोन,
चूरि थावोन काँसि कर हावोन।
वॉन्स सूर तॅमि संुज़ि प्रेयि यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

वादु सूर कोनु आव यीच़ क्या छि तॉर,
फिर्य फिर्य कॅज तमि हॅज गॅयि कॉर।
गोसु क्या गोस लोसु लुयि यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

मॆत्रस नॆत्रन मंज़ वथुरोस,
क्वंगु कोफूरु मुशकु तन नावोस।
अॅर्यनि रंग गोमुत छु हियि यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

बुध रूप बुध देव शुद्ध सत् च्यथ,
वुज़नावि ज़गतस फेरि करि ह्यत।
सारु रूप पानु गारगी यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

ज़ॉल्य पंजरु जानावार च़लन,
कॉल्य मा बोलन तोतु कलन।
अदु कर हरदु ज़रदी यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

सत्‌ची बुतरॉच़ कासवुन व्याद,
प्रथ दीशि बासि नॊन धर्मु संवाद।
पथ रछनि सॅती द्रोपदी यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

भवसरु अग्यानु क्रिमुनुय कॊर,
बंदकॊर गजेन्दरस लॊग शॆशुदर।
हरीहर वरदा बॆयि यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

तस दिन न्यशु दिन छु कॆंह बास,
मच़ु गॉमच़ु लोलु हच़ उदास।
ऑम्य ज़ॉम्य प्यालु खॆनि चॆनि यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।

वेलु वोत मेलुनुक खेलव रास,
अथुवासु वरि करि सोनुय पास।
'भास्करु' वनतु आश्चर्य यियिना।।
हा उधव वनतो बॆयि यियिना।।०।।



द्वह दरि गोम तूर्य पतु लारय

द्वह दरि गोम तूर्य पतु लारय।
आरुवलु नतु मारय पान।।

द्वारिकायि छा किनु मथुराये, वति वथुरय पान पादन।
नेत्रन छम अशुने दारय, आरुवलु नतु मारय पान।।
म्वनि व्वंदुहय बंदन कासतम, व्वंदि बासतम अंदुनम न्याय।
नंदु नंदन यितु दुबारय, आरुवलु नतु मारय पान।।
सालु यिखना नॉल्य पॉरावय, भक्ति म्वखतु मालु नॉल्य कनुदूर।
कॉल्य कालु मारि अदु ल्वकचारय, आरुवलु नतु मारय पान।।
ज़गि हुंदि राजु महाराजय, आदन बाजे बोज़ फॅर्ययाद।
यूगियन हुंदि ताजदारय, आरुवलु नतु मारय पान।।
लोलु वॉनी नादा लायै, पोशुनूल ज़न गेवि कृष्णु गीत।
साज़ संतूर राग सेतारय, आरुवलु नतु मारय पान।।
मान अवमानु निशि रूद न्यारय, ध्यानु चाने रोंग तिमव तन मन।
गरु बार गोख वैकुण्ठ दारय, आरुवलु नतु मारय पान।।
हिशुरस ति ईशु द्वार औतारुय, निशु बास कास व्वन्य अग्यान।
रेश्य क्रेशान डेशुहोन वारय, आरुवलु नतु मारय पान।।
मंज़ मारकन वॅन्य दिनि नेरय, ज़ूनि छ़ांडथ मंज़ तारकन।
'सास भास्करु' तीज़ दारय, आरुवलु नतु मारय पान।।



च़्यथ विकासु रासु अथुवासु प्रेम वादु

च़्यथ विकासु रासु अथुवासु प्रेम वादु।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।
शांत तीज़ु आकार नादु ब्यंद ओमकार,
साधानायि अर्धु नादा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।
कनसुन समहार हम सू निर्विकार,
संसारु कास व्याधा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।
राज़ु योगु अनहत बाजि सू हम सू,
गू गू कुकिलि नादा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।
होशु कृष्णु कृष्णु गीत वनु वॅन्य दिमुयो,
जोशु पोशु नूलु संवादा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।
वथुरोस नेत्रन मंज़ मथुराये,
प्रेमु मायि अेहलादा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।
स्वर्गुचि अछ़ु रछ़ु वछ़ु नच़ुनस गॅयि मच़ु,
यावुनस ह्यतुख दादा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।

गूपियन सन्म्वख सु सौरूप हर म्वखु,
स्वखु म्वखु प्रसादा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।

नठ छि शाह परुनय दरि करि कुस मान,
अनुभव गुनु वादा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।

क्रेशान रेश्य नेत्य डेशुहोन ननि नोन,
गूपियन छु धनिवादा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।

पर तु पान मशुरिथ तस पतु भर लोल,
कॉल्य गछ़ि वादु अदा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।

शामु प्रभातु मेल खेल श्वासु उश्वासु,
'भास्कर' निरबाधा राधा कृष्णु परयो।
लोलु बन्सरी नादा राधा कृष्णु परयो।।



दर्शुन दियि यियि नाये

दर्शुन दियि यियि नाये, कर सनु सोन कृष्णु राये।
न्यरनय नयिनुय छ़ाये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
नेत्ररन अन्दर वथुरावोस, सीनु मुच़रिथ कीनु भावोस।
ल्वलि ललवोन लोलु माये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
यी वनतु थनि चूर् सुय, प्रारान छि तिम ह्यथ गुरसुय।
थनि लोटु ह्यथ गूर्य बाये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
वथुरोस वतन हीय अम्बरय, लुयि लोसु तस क्या छु गम बरुय।
प्रेयिवुनि परोस तोताये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
मथुरायि गोकुलु वॅन्य दिमोस, जमुनायि बलु सॉरी समोस।
पान आलु वोस मालाये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
न्यन्द्रि हच़न लूटिथ सु गव, बिंद्राबन वॅन्य वोन रटव।
नालु मति रटोन पालुनाये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
उधव च़ु वनतस कोनु आव, कति रूद व्यापक तस छु नाव।
बॅखत्यन हंज़ि रक्षाये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
सनु वुन मनस बन्सॅरी नाद, वनुवुन च़्यतस पोवथस याद।
न्यन्द्रि हच़ु छ़ँद्रन आये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
गंधर्व दीवता स्यद साद, नारद तु व्यास बेयि प्रेहलाद।
प्रारान छि प्यठ जमनाये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
ग्वालु बालु वॅछ़्य गॉव ह्यथ, प्रारान छि सॉरी पॅच़ प्यथ।
गूपी ज़ल बरनि द्राये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
डेंशुनुय योद मा क्रेशुनुय, रॅशु रागु रोस वुठ फेशुनुय।

त्रेशु हचु मरन मा माये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
ह्यस होश मॅशरिथ पर तु पान, तंबलेमचु पॅुच़ प्यवान।
वनु वनु वॅन्य दिनि द्राये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
संवाद बूज़िथ ज़ीरु बम, अज़पा ज़पु सोहम हम।
ओम भूर भुवः धारुनाये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।
अथुवास कॅरिथुय बासि नोन, वासुदेव रास तति खेलुवुन।
'सास भास्कर' शोभुनाये, कर सनु सोन कृष्णु राये।।



म्वनि मंज़ ललुवथ कॅन्या लालो

म्वनि मंज़ ललुवथ कॅन्या लालो।
भय हर बालु गोपालो वे।।

गूपियन सुत्यन मारान छ़ालो,
द्वख हर भक्ति रखिपालो वे।
ज़नमु गटु कासतम कंसुनि कालो।।
भय हर बालु गोपालो वे।।०।।

भयि मंज़ कडतम दयि श्री अकालो,
रखि पालु हा कृपालो वे।
प्रेमु मसु बॅरिमय मसकी प्यालो।।
भय हर बालु गोपालो वे।।०।।

दूर्‌यर चोनुय कोताह बु च़ालो,
वलनु आस ज़न्मु ज़ालो वे।

ज़ानु दुकारि बनि तथ परकालो।।
भय हर बालु गोपालो वे।।०।।

खटतम मतु पान रठतम नालो,
आसतम चुय नॉली नालो वे।
लूसुस प्रारु व्वन्य कोता कालो।।
भय हर बालु गोपालो वे।।०।।

ह्यरान वुछुथस अशिने च़ालो,
लालो छेत्य गॅयम बालो वे।
बालि गोम बाल तय क्यहो संबालो।।
भय हर बालु गोपालो वे।।०।।

द्रह आम सोरान छेत्य गॅयम बालो,
पलि कॅंह पोवुम नु मालो वे।
अथु छिम छेन्य तय छस बेहालो।।
भय हर बालु गोपालो वे।।०।।

येलि बनि समयूग आसि कुस कालो,
दुयी रोज़ि नु कुनि कालो वे।
ग्वरु शबद यिमुयो पतु नन्दुलालो।।
भय हर बालु गोपालो वे।।०।।

नय छुख आकाशु नय पातालो,
नय छुख जंगलन तु बालो वे।
वनि छुख नु यिवान ऑसिथ नॉली नालो।।
भय हर बालु गोपालो वे।।०।।

मनु सरु कुय बन राज़ु मुरारो,
'भास्करु' सुंद छुय च़ेय सालो वे।
रछतम संकटु येमि कलि कालो ।।
भय हर बालु गोपालो वे।।०।।



गोपालु गोकुलो

गोपालु गोकुलो, वलु रास आस गिन्दॉनी,
मोहनु हांच़लो, काचु ज़ून ज़न छि गलॉनी।
श्रावुन तोतु कल्यो, व्वलु रास आस गिन्दॉनी।।
न्यरभय निष्कलो, कलि कल छम मे गनॉनी।
कलि वुज़ि शेशकलो, वलु रास आस गिन्दॉनी।।
शांकलु वांकलो, लोलु हाँकल नु छ़ेनॉनी।
बोंबरनि गांगलो, वलु रास आस गिन्दॉनी।।
इन्द्रो मन फ्वलो, गोविंदु गीत ग्वन्दॉनी।
बंदनु म्वकलो, वलु रास आस गिन्दॉनी।।
ग्वालु बालु खेलो, वॅछ़्य गॉव ह्यथ प्रारॉनी।
जसुदायि मायि वलो, वलु रास आस गिन्दॉनी।।
आयि जिगरस करतलो, मटि मार मा छुय खसॉनी।
लर त्रॉविथ छुस बरतलो, वलु रास आस गिन्दॉनी।।
थनि च़ूर डांबलो, यनु छ़्यनु गोख तनु कोनु आख।
म्वनि लोसु व्वन्य वलो, वलु रास आस गिन्दॉनी।।

शामु कामुकि कोमलो, रुमु रुमु राम छु रमॉनी।
म्वखतु केश केशु रोम्बुलो, वलु रास आस गिन्दॉनी।।
दूर्यरु सूर मलो, दोरि दोरि फेरुवॉनी।
सनु गोम यिनु चानि बलो, वलु रास आस गिन्दॉनी।।
वथुरय म्वानि मंज़लो, व्यास नारुद छु तोतॉनी।
'सास भास्कर' प्रज़लो, वलु रास आस गिन्दॉनी।।

✱ ✱ ✱

वेरि तॅम्य संुज़ि शेरि प्रान संदोरुम

वेरि तॅम्य संुज़ि शेरि प्रान संदोरुम।
द्यान हय दोरुम कृष्णु द्यान हय दोरुम।।
नाज़नीन पानस सिंगार पोरुम,
परमु आकाश म्योन माल्युन।
मुह गटि सु प्रकाश गटि गाश होरुम।।
द्यान हय दोरुम कृष्णु द्यान हय दोरुम।।०।।
सुबह शामु प्रभातु नोन मे व्यचोरुम,
रुमु रुमु च़ोरुम खोरुम पन।
ओम परु नोवुम मुह मद मोरुम।।
द्यान हय दोरुम कृष्णु द्यान हय दोरुम।।०।।
ज़ीरु बम तारि नादु ब्यंद स्वर खोरुम,
दशु नादु मुरली वाद प्रखट्याव।
राधा कृष्ण कृष्ण वाद उश्च़ोरुम।।
द्यान हय दोरुम कृष्णु द्यान हय दोरुम।।०।।

दर्द नयि ऑश ज़ालि ज़ालि होरुम,
सथ पर्द च़ॅटिथुय हूर वनुवान।
अनुग्रेह सागर आगरु फ्योरुम।।
द्यान हय दोरुम कृष्णु द्यान हय दोरुम।।०।।
दिह अभिमान मुह ग्यव ज़न कोरुम,
अहंकार ज़ोलुम रत्न दीप।
ग्वडु मानसरु वरु हम हमसु दोरुम।।
द्यान हय दोरुम कृष्णु द्यान हय दोरुम।।०।।
सतचे अथुवासु रास खेलु नोवुम,
'सास भास्कर' खास बास वनि आम।
अथुवासु विकासु होश व्यसु तोरुम।।
द्यान हय दोरुम कृष्णु द्यान हय दोरुम।।०।।



अरे कन्हैया तू वस्त्र दे हमारे

अरे कन्हैया तू वस्त्र दे हमारे।
श्री शामा प्रभु प्रीतम प्यारे।।
चिदानंदा सदा श्री गोविंदा, मकुंदा बाल कृष्णा नाद बिंदा।
नित्यानंदा ज़गत कारण मुरारे, श्री शामा प्रभु प्रीतम प्यारे।।
हुआ अर्पन तेरे चरनों में तनमन, ज़गत में कुछ नहीं देखता हूँ तुझ बिन।
कुटुंब घर बार पति सारे के सारे, श्री शामा प्रभु प्रीतम प्यारे।।

वृति जैसी सती स्थिति पति बिन, रत्ती भर हैं नहीं गति प्रतिक्षण।
सुमत उन्मत तेरे दर्शन बिखारे, श्री शामा प्रभु प्रीतम प्यारे।।
शरीर और प्राण इंद्रिय जो तनमय, बहे अंतर निरंतर साखी चि़न्मय।
नहीं तुझ बिन कोई दर्शन हमारे, श्री शामा प्रभु प्रीतम प्यारे।।
रेश्न अ़रमान क्रेशान डेंशिहोन ज़ाथ, छि वुठ फेशान अॅछव दिन तु बॆयि रात।
छि तोशान गूपिय रोशान द्राये, श्री शामा प्रभु प्रीतम प्यारे।।
ज़गत बीज़ शांत तेरा है विस्तार, त्रिकूटि 'भास्कर' खास दीप्ति आकार।
अॅग्न, बिजली, सूर्य, चंद्रम तारे, श्री शामा प्रभु प्रीतम प्यारे।।



स्वरु सामु सुबह शामु शामु रूपु सुय

स्वरु सामु सुबह शामु शामु रूपु सुय।
लागोस दसतु दसतय पंपोश।।

नाद लोय राधायि बालु कृष्णस तय,
यनु चुय छ़्यनु गोख तनु कोनु आख।
प्रारान सूर गोम बालु पानस तय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

ज़ीरु बम सुय नाद खोतं अ़र्शस तय,
फ़रशु सान च़राच़र लोल बरनु आव।
सुय लोल बॉगरनु आव ज़गतसतय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

ग्रख दिच़ लोलन तथ कुनिरसतय,
कैंहन मंज़ क्याहताम गव नमूदार।
रंगु रंगु फ्वलिथ आव सु पूरन बरजसतय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

अॅग्नस तु पवनस गगनु मण्डलस तय,
बुतरॉच़ आबशार पोश्य तु जानवार।
राधा कृष्ण कृष्ण अज़पा ज़पसतय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

लोलु आलव द्युतुन उधवसतय,
हा उधव गछ़ टुकन ब्रुजु मंडलस।
तिहिंदि प्रेमु छुस गोमुत मसतानु मसतय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

भक्ति तिहुंज़ वॉच़ आकाशसतय,
तमि लोलु शोलान नब तु बुतरात।
बोलान कृष्णु-कृष्णु शिवु गाशसतय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

ती बूज़िथ उधव वोत मंज़ गोकुलस तय,
वॅछ़्य तु गॉव गूपी रूस्य जानुवार।
बुल तु गुलज़ार निशि आयि तसतय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

च़राच़र दॅाह देशायि सॉपुनिथ मसतय,
शुनि मंज़ु बोलान विनुहुक नाद।
पर तु पान मॅशरिथ ज़पान कृष्णसतय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

मोर च़ातक पोशुनूल नच़ुनस मसतय,
कोह तु वन बॆयि नॆंदी ह्यथ सब्ज़ार।
अज़पा सुय बोल कुकिलि नादसतय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

यी डींशिथ उधव गव मंज़ द्यानसतय,
यूग ज्ञानु द्यान मॊठुस तति लय गव।
शुन्य गोस निनु आव वनि क्या कसतय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।

सुय रास चुरास लख एक रसतय,
'सास भास्कर' तति नॊन चमकान।
हावसु तमि बु ति तथ ज़ागस तय।।
लागोस दसतु दसतु पंपोश।।०।।



अष्टु ब्वज़ु नारायनु कष्टु कर सॉ दूर

अष्टु ब्वज़ु नारायनु कष्टु कर सॉ दूर।
छ़ॆनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।

ध्रुवु सुंदि पॉठ्यन दितम वर्दान,
शुकु दीवुन्य पॉठ्य प्रावु निर्वान।
शक्ति पातु अनुग्रेह करुम पूरि पूर।।
छ़ॆनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।०।।

ऋद्धि सिद्धि प्राव संपदा,
रूग शूक कास बास नोन सर्वदा।
बूग यूग समयूग दितम पूरि पूर।।
छ़ॅनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।०।।
सत वॅहरि प्यठ च़ेय पत पत द्रास,
अत गत ज़न्म मरनच हान कास।
मत ना च़ेय पत वथ छम मे दूर।।
छ़ॅनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।०।।
वार छुम न नेर फेर हॉ मांकिन,
तारकन मंज़ गॅजमुच़ ब काच़ ज़ून।
च़ट सथ पर्द छुन दस्तूर।।
छ़ॅनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।०।।
सतकुय मस चाव ह्यस के आगर,
ग्रख लगि गागर सागरस तान्य।
ह्यस स्नान तमि मसबन मखमूर।।
छ़ॅनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।०।।
प्रेम मस खॉस्य बॅरिम बरबुक आस,
पास कर पनन्यन टाठ्यन हुंद।
द्रय चॉन्य छम हा वसि गोम सूर।।
छ़ॅनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।०।।
लोलचि रगि सग फेरि हेरि ब्वन,
दर्दचि दगि पय फेरि क्षन क्षन।
तमि स्नेह रेह छु दज़ान कोहितूर।।
छ़ॅनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।०।।

पुष्कर नाथु होश दिम गोश थाव,
वॅःज चानि फिर्य फिर्य हॅज गॅयम कॉर।
म्वनि लोसु व्वन्य मसॉ ह्यम दूर दूर।।
छ़ॅनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।०।।

अथु वासु रोटुम चोन दामन
'सास भास्कर' कास मुंह अंधकार।
गथ दिम पथ रछुम नतु मलु सूर।।
छ़ॅनथ रोनि मंज़लिस करय गूर गूर।।०।।



परात्पर परमु शिवी

परात्पर परमु शिवी।
जय दीवी दीवी।।

न्यर द्वँदी बिंदी, जय जगत आनन्दी।
नादु बिंद मद्य सॅंदी, जय दीवी दीवी।।

पथ रछतम वरतम, सत् भावु सथ करतम।
प्रेमु आनन्द बरतम, जय दीवी दीवी।।

तीज़ु मय आकारसुय, बीज़ुमय ओमकारसुय।
शरण तथ आधारसुय, जय दीवी दीवी।।

सुरासुर न्यथ छि स्वर्नस, कारण गथ करनस।
गनधर्व वीद परनस, जय दीवी दीवी।।

अष्ट् सिद्ध नव निद्ध बास, यष्ट् दातरी कष्ट् कास।
द्रूष्ट नष्ट कर सपष्ट बास, जय दीवी दीवी।।

ऐं बीज़ कल्लीं बीज़ी, शाँत ईकांत तीज़ी।
श्रीं शक्ति न्यर् बीज़ी, जय दीवी दीवी।।

स्वख प्रकाश उदय, दशम् द्वार मध उद्य।
इन्दुरव बनि ईकुमय, जय दीवी दीवी।।

उर्ध् नाद् बनि उत्पत, प्रसाद् चानि बान् वत।
शुद्ध शिव बनि प्रापत, जय दीवी दीवी।।

धर्म् अर्थ् मोक्ष कामुय, दिव वॅन्य चु परम् धामय।
पूर्नस छु निष्कामुय, जय दीवी दीवी।।

बालक वत भाषा, बोज़तम छम आशा।
मूह गटि हाव गाशा, जय दीवी दीवी।।

चॉन्य दया ज़ीवन, तवय कारण छि सीवन।
मन् वाँछित दीवन, जय दीवी दीवी।।

'सास भास्कर' छु प्रज़लान, च़्यथ विमर्शु दीप्तिमान।
हरशि गण नित्य र्निवान, जय दीवी दीवी।।

बाह रव गाह चोन माह पैकॅरिये

बाह रव गाह चोन माह पैकॅरिये।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।

नाज़नीन पानस साज़ वॅम्य कॅरिये,
नॉज़ुल्य जादू गॅरिये लो।
ब्रमुरॉव्य ॲम्य चॉन्य सेहरु सामरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।० ।।

रुवनि गोड श्रोनिदार चूनि जॅर्‌य जॅरिये,
शिनि मंज़ु बोलान बिनाहुक नाद।
पॅरिमुत्य ज़ॅरय गॅयि अनपर पॅरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।० ।।

असमानु वॅछ़खय सोन्य कोतुरिये,
कमि बाज़ुरिये त्रॉवुथ रव।
शाह पर लूसिम मान कॅर्‌य वॅरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।० ।।

हूरन सूर गव चानि दूर्‌यरुये,
नूर बॅर्‌य बॅरिये तिम छि वनुवान।
अरमान ख्यथ रोज़ु स्वॅगुचि पॅरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।० ।।

मूरि मूरि फोज़ुखय मुश्क़ु अंबॅरिये,
रस मसु टूरॖय चॉन्य़ बॅरिये कॅम्य।
दूर चॉन्य द्वह तु राथ कॅम्य अॅलुरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।०।।

कमि आलि द्रायख हा रंगु चॅरिये,
पॊरयै कुकिल्यव गोविंदु गू।
स्वनुहॉरय पखु चानि म्वखतु जरॖय जॅरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।०।।

रुमु रुमु ज़ुलफ़ुक्य यिम वालु बॅरिये,
दुखालु दानु बांबॅरिये लो।
ज़ालु लॅग्य राज़ु हंस प्यठ शेशदॅरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।०।।

अंबर हारान नेरख पमबुसॅरिये,
रंबुवुन्य कॅम्य गम बॅरिये लो।
बॊंबरुन गोसु मा गॊय च़े लो-लॅरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।०।।

शुराह सिंगार चॉन्य पुरज़ॅरिये,
गॅरिये कॅम्य ज़रगॅरिये लो।
कछ़कर दसवानु स्वनु ग्वडु कॅरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।०।।

आगरु प्यठुची बागु बबॅरिये,
नॊग्यरायिन्य समन बॅरिये लो।

छ़ॉगिस मय ज़ाग व्वन्य चु नार्गेरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।०।।

प्यालु चाव माला माल बर्य बॅरिये,
साकिया युथ नु बाक़ी रोज़ि ग्राव।
'भास्करु' सास भास न्यबरु अँदुरिये।।
ना ज़ुच थॅर शाह स्वंदॅरिये।।०।।



ज़गथ बीज़ च़ॅकुर शोडश डल

ज़गथ बीज़ च़ॅकुर शोडश डल, रमान नित्य च़ॅकरु पीठस तल।
नमान कारण परान मंगल, उमा देवी क्षमा वत्सल।।
मंगलदा सर्व मंगॉली।।

प्यमोय पादन तु थवी लादन, क्षमा कर सान्यन अपराधन,
चु कन दार वारु फॅरियादन, अबल बुल बालुनुय नादन।
तवय त्रॉविथ छि लर बर तल, मंगलदा सर्व मंगॉली।।

संनातन धर्मुची रछ लाज, नवन पीठन कुनुय सामराज,
चु स्यद कर पानु छख सरताज, छि त्रनवय लूक च़ेय मोहताज।
महाराज आदि राज श्री फल, मंगलदा सर्व मंगॉली।।

चु र्‌यन, रूग, भयि, शूक दूर कर, पनुन अनुग्रेह चु बरपूर कर,
चु क्रूध काम विषयन सूर कर, चु भोग योग ग्यान मंज़ूर कर।
चु समयोगु संपदा दितु अटल, मंगलदा सर्व मंगॉली।।

तुहे माता पिता दाता, तुहे भ्राता ज़गत माता,
तुहे भक्तयन ति वरदाता, तुहे दुष्टन सदा गाथा।
चु नॅन्य भास कास सर्वु ग्रेह बल, मंगलदा सर्व मंगॉली।।

यि माया मुह करतम चु दूर, चल्यम अज्ञान फ्वल्यम युथ नूर,
गलन काम क्रोध दुर्ज़न चूर, पनुन अनुग्रेह चु कर भर पूर।
तवय द्यन राथ छम चॉनी कल, मंगलदा सर्व मंगॉली।।

फ्वल्यम अदु हृदयिकुय कमल, चल्यम अज्ञानुची गांगल,
दज़्यम काम क्रोध मुह ज़ंगल, वुज़्यम शेखर कला शेशकल।
वज़ान नादु ब्यंद तार न्यश्चल, मंगलदा सर्व मंगॉली।।

भॅद्रकॉली व्वजॉली नेर, सतुच तलवार ह्यथ वारुफेर,
छि कर फुरसथ मु कर व्वन्य चेर, अन्याय छठ छाय कास अंधेर।
चु भास 'सास भास्कर' न्यरमल, मंगलदा सर्व मंगॉली।।



ज़गत बीज़ तीज़ परि पूरन

ज़गत बीज़ तीज़ परि पूरन।
कॅरिथ छख व्याप्त चुय हेरि ब्वन।।

नमामे चरन् कमलन द्वन, क्षमा कर हे उमा देवी।।
परात्पर पर अपर विसतार, त्रे कारन रूप् छु बासान सार।
दयाये चानि व्यन् दुस्तार, क्षमा कर हे उमा देवी।।
ऋणन शूकन भयन रूगन, क्षनन मंज़ छख करान मूचन।
दिवान भोगन त् बेयि योगन, क्षमा कर हे उमा देवी।।
कटाक्षा योद गछ़ख कॅरिथुय, दयाये चानि गछु तॅरिथुय।
नेथुर छिम लोल् अशि बॅरिथुय, क्षमा कर हे उमा देवी।।
पनुन प्रन करत् व्वन्य चुय याद, दिवान शुर लोल् हॅत्य छुय नाद।
चे रोस कुस बोज़ि सोन फॅर्ययाद, क्षमा कर हे उमा देवी।।
करान सृष्ट थ्यथ त् बेयि समहार, त्रेकारण पान् छख आधार।
छु चाने आगिन्या अनुसार, क्षमा कर हे उमा देवी।।
तू हे माता पिता भ्राता, गुरु बन्धो त् बेयि दाता।
शुर्यन कुस असि चे विन माता, क्षमा कर हे उमा देवी।।
बरस तल ॲस्य गँडिथ छी कर, अबल बालक छि त्रॉविथ लर।
छे मा आश काँसि हुंज़ चुय वर, क्षमा कर हे उमा देवी।।
मे दिम ज़्यव गीत ग्यवय चॉनी, नतय ह्येकि क्या वॅनिथ वॉनी।
करान वीद चोर त्वता चॉनी, क्षमा कर हे उमा देवी।।
चु पानय पान् छख ज़ानान, पनुन महिमा कुस करि मान।

ब्रह्मादिक दीव छि तति व्यसुरान, क्षमा कर हे उमा देवी।।
यि माया मुह करतम दूर, ज़लान अंधुकार फ्वलान आसि नूर।
बन्यम साक्षात्कार बरपूर, क्षमा कर हे उमा देवी।।
यि गटु छ़टु छ़ाय व्वन्य कासतम, प्रेत्यक्ष 'सास भास्कर' बासतम।
सदा सतु किन्य प्रसन्न आसतम, क्षमा कर हे उमा देवी।।



श्री राज्ञन्या ख्यमाकार

भक्तानु ग्रेह कारिनी शक्ति त्रेलोक धारिनी।
राज्यरेन्य रानि ब्रॉरी, श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

चमकन कूटि रवय, चित गगनु त्राव प्रवय।
अनुहत शिवु शिवय, बोलुवुन छु बूद ओमकार।।
द्वादशारकु तीज़ु आकार, मुकटु सोलह सिंगार।
हटि त्रोट्य तु मालु शाहमार, सिंहासनस तु सवार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।
चित रूपु तीज़ु समवित, स्यदु रूपु बीज़ असतित।
आनन्दु स्यंदु विकसित, प्रखच़ार यि चोन सोफार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।
ह्रीम बीज़ कलीम बीज़ी, सौ बीज़ शांत तीज़ी।
राम राज्ञा अॅबीज़ी, स्वाहा सदा नमसकार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

भक्तयन रॅछिथ पथ नित्य, शक्ति त्रैलोकि अस्तित।
दु॒र्गी निवार॒ दुर्गत, दीर्घ रोग व्वन्य च॒ निवार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

प्वन्य पाप कर्म॒ लोनुय, रुत लेख छल च॒ प्रोनुय।
मटि न्याय छुय च़े सोनुय, नोन हाव व्वन्य च॒ प्रखचार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

ऑमकार वीद गोनुथ, त्रैयि बीद ॲबीद च़े मोनुथ।
क्या माने तथ च़े ज़ोनुथ, ज़ान॒नस कर छु तकरार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

निश दिन शरण त्रैकारन, शेष्य दर लॅगिथ छि प्रारण।
रॅश क्रेश॒व॒न्य व्यच़ारन, प्रारान छि न्यन्द्रि बेदार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

काम क्रूध लूभ दुर्जन, गाल पाल व्वन्य च॒ स्वरज़न।
पर्बत कॉल्य लरज़न, दीह कुय क्या छु आधार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

चॉनी दया भवॉनी, हेकि क्या वॅनिथ यि वॉनी।
अँज़राव न्याय सॉनी, गँज़राव छि चॉन्य शीरखार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

नाना रूप दॉरिथ, ऑर॒त्य च़े सॉर्य तॉरिथ।
व्वन्य वॉर्य सॉन्य छि ऑर्त्य, तॉर क्या च॒ दार अवतार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

गौरी अघूर द्रूख कास, ग्वर॒ म्वख॒ संनम्वख॒ बास।
हर म्वख॒ छ़ार॒वुन दास, 'सास भास्कर' चमत्कार।।
श्री राज्ञन्या क्षमाकार।।

ललुवान सीरि हक ज़ेरि ज़ेरि हेरि ब्वन

ललुवान सीरि हक ज़ेरि ज़ेरि हेरि ब्वन, छम वज़ान ज़ीरु बम तार।
ह्यसके मैखानु मस येलि बु चोवनस बोवनम सीरि असरार।

आलव तोरय गोख दॅर्ययाव दामु चोख, शोकन कोरुख मिलुचार।
सतवय आकाश सतवय पाताल तलु प्यठ दिथ कुनुय ठान।

गाह गटु गाह गाश गाह प्रकाश नूरान यकसान सोरि सामान।
रंगु रंगु बेरंग सूरथ स्व मूरथ नॅन्य द्रायि दरबाज़ार।

गगुनय पवुनय लागुनय बागुनय सथ नयि बेयि नव द्वार।
सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि नयि म्वलुवान ह्यथ खॅरीदार।

पन्नुय ह्योन द्योन पन्नुय बाज़ार पानय ग्राख बेयि सोदागार।
हर्दु सोंतु कुनिरस वोंत कुनि लोबमस नु दर्दु नयि फेरि शेहजार।

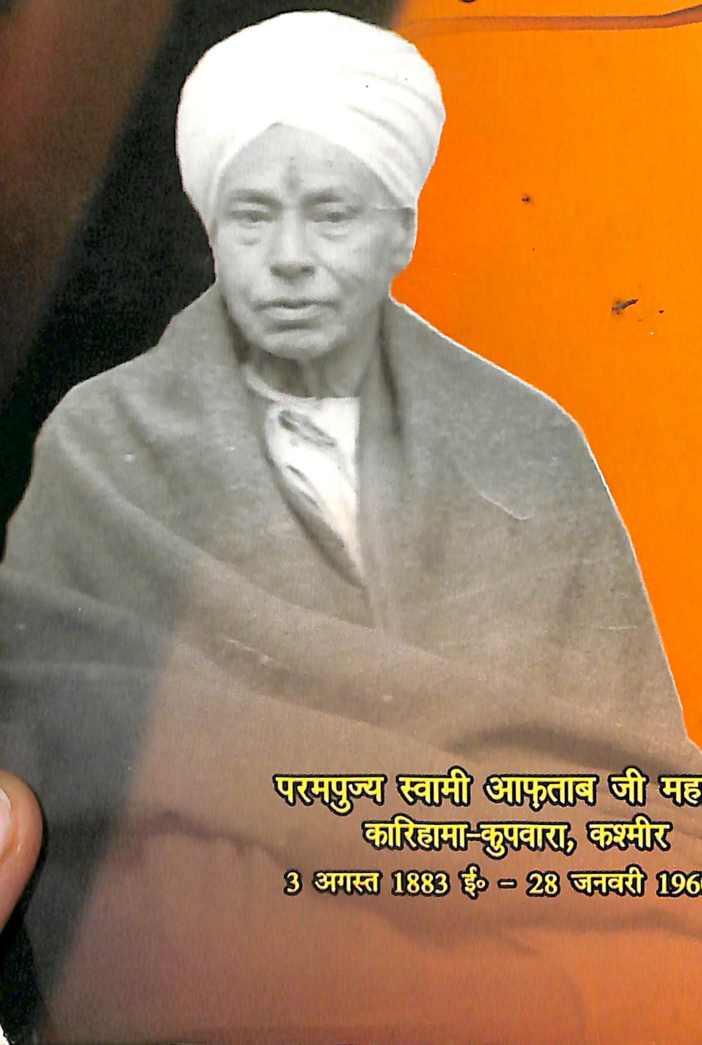
सथ पर्दु च़ॅट्यथुय हूर द्रायि वनुवान पोशन कोरुख तूमार।
ग्रख लॅज सोदरस दरवाज़ु खुलु गॅय अनुग्रेह दितुख अंबार।

कंदा पोरय ज़ूनि डबि शेष्य तु रव सॉविथ नॉविथ अँद्रमि तोंदरय प्रान।
गटि मंज़ भास्कर' सास भासुनॉविथ शिवु गाशु कीशव सुय शांत आकार।



ललुवान सीरि हक ज़ेरि ज़ेरि हेरि ब्वन,
छम वज़ान ज़ीरु बम तार।
ह्यसके मैखानु मस येलि बु चोवनस
बोवनम सीरि असरार।

आलव तोरय गोख दॅर्ययाव दामु चोख,
शोकन कोरुख मिलुच़ार।
सतवय आकाश सतवय पाताल
तलु प्यठ दिथ कुनुय ठान।



परमपुज्य स्वामी आफ़ताब जी महाराज
कारिहामा-कुपवारा, कश्मीर
3 अगस्त 1883 ई॰ - 28 जनवरी 1960 ई॰

Printed ar JK Offset Printers, 315 Jama Masjid Delhi 110006